आईआईपीएस दर्पण

(स्थापना / Established in 1956)
बेहतर भविष्य के लिए क्षमता निर्माण
Capacity Building for Better Future

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान
(विश्वविद्यालय समतुल्य)

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन, भारत सरकार

अंक : 01 अक्टूबर - मार्च 2026 छमाही पत्रिका

आईआईपीईएस दर्पण

वर्ष : 2026
अंक : 01
अक्टूबर - मार्च -2026

संरक्षक
डॉ. संजय मोहंती
निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर

संपादक मंडल

डॉ. कुणाल केशरी
सुश्री निवेदिता मिश्रा

सहयोग

डॉ. अर्चना
सीडीजी

श्री अभिषेक गुप्ता
शोध छात्र

रचनाकारों से अनुरोध

- आईआईपीएस दर्पण पत्रिका के आगामी अंक हेतु रचनाकारों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएँ केवल टंकित रूप में ही भेजने का कष्ट करें।
- यह सुनिश्चित करें कि प्रेषित रचनाएँ स्तरीय, मौलिक एवं प्रकाशन योग्य हों।

इस अंक में......

	विषय सूची	पृष्ठ
संरक्षक	निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर	2
मुख्य संपादक	राजभाषा प्रभारी	3
संपादक	हिन्दी अधिकारी	4
राजभाषा कार्यान्वयन समिति	आईआईपीएस के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों का परिचय	5
आईआईपीएस के बारे में	आईआईपीएस की झलक	6
गतिविधियां	आईआईपीएस के विभागों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियां	8
सेमिनार/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएं	आईआईपीएस द्वारा आयोजित सेमिनार/संगोष्ठियाँ	21
निबंध	निबंध सामग्री	29
कविता	कविता काव्य संग्रह	35
उपलब्धि	उपलब्धि	38
शोध	शोध सामग्री	40
साहित्य जगत	साहित्य जगत से	41

रचनाएं भेजने का पता :
हिंदी कक्ष, आईआईपीएस, गोवंडी स्टेशन रोड, संजोना चैंबर के सामने, देवनार, चेंबूर, मुंबई, महाराष्ट्र 400088
ई मेल : hindicell@iipsindia.ac.in

"आईआईपीएस दर्पण" में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। व्यक्तिगत आलेखों एवं कविताओं के लेखक अपना कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे।

– संपादक

डॉ. संजय कुमार मोहंती

निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर, अध्यक्ष

कार्यालय प्रमुख की कलम से.........

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान द्वारा हिन्दी पत्रिका "आईआईपीएस दर्पण" के शुभारंभ की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल संस्थान की विविध शैक्षणिक,प्रशासनिक एवं शोधात्मक गतिविधियों का दर्पण होगी, अपितु हिन्दी भाषा के संवर्धन एवं प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मुझे विश्वास है कि "आईआईपीएस दर्पण" पत्रिका संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को एक सशक्त मंच प्रदान करेगी, जहाँ वे अपने विचारों, शोध कार्यों, अनुभवों एवं सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा कर सकेंगे। यह प्रयास राजभाषा हिन्दी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ ज्ञान-विनिमय की संस्कृति को भी सुदृढ़ करेगा।

मैं इस सराहनीय पहल के लिए हिंदी कक्ष तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि सभी कार्मिक इस पत्रिका के प्रकाशन में सक्रिय सहभागिता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होने के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति अभिरुचि को भी बढ़ाएगी।

मेरी ओर से "आईआईपीएस दर्पण" के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हिंदी कक्ष को हार्दिक शुभकामनाएँ।

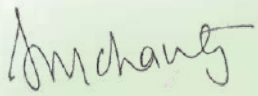

(डॉ. संजय मोहंती)
निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर

डॉ. कुणाल केशरी
सदस्य

हिंदी प्रभारी की कलम से.........

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान द्वारा छमाही हिन्दी पत्रिका “आईआईपीएस दर्पण” का प्रथम अंक आपको सौंपते हुए मुझे आत्मिक प्रसन्नता हो रही है। यह पहल संस्थान में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा विभिन्न गतिविधियों को साझा मंच पर प्रस्तुत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह पत्रिका संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को अपने विचार, अनुभव, शोध कार्य तथा रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करेगी। इसके माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति रुचि में वृद्धि होगी तथा आपसी ज्ञान-विनिमय को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

मैं हिंदी कक्ष तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों द्वारा किए गए सतत प्रयासों की सराहना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि संस्थान के सभी सदस्य इस पत्रिका में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इसे और अधिक उपयोगी एवं समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। साथ ही, यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन को आगे बढ़ाते हुए संस्थान की इस प्रथम हिन्दी पत्रिका “आईआईपीएस दर्पण” की गरिमा एवं प्रतिष्ठा में निरंतर वृद्धि करेगी।

“आईआईपीएस दर्पण” के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हिंदी अधिकारी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. कुणाल केशरी)
सहायक प्रोफेसर एवं हिंदी प्रभारी

सुश्री निवेदिता मिश्रा
सदस्य-सचिव

संपादकीय.........

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान की पहली छमाही हिंदी पत्रिका "आईआईपीएस दर्पण" का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका संस्थान में हिंदी के प्रोत्साहन तथा विविध शैक्षणिक, शोधात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों को एक मंच प्रदान करने का एक सार्थक प्रयास है।

इस अंक में संकलित विभिन्न लेख, शोध-आलेख, संस्थान की गतिविधियों का विवरण तथा साहित्यिक रचनाएँ पाठकों को न केवल ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान करेंगी, बल्कि उन्हें राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग से भी अवगत कराएँगी। इसके माध्यम से पाठक हिन्दी में अभिव्यक्ति की विविध संभावनाओं को समझ सकेंगे और अपने कार्यों में हिन्दी के प्रयोग के प्रति प्रेरित होंगे।

वर्तमान डिजिटल युग में हिंदी का दायरा निरंतर विस्तृत हो रहा है। ई-प्रशासन, डिजिटल संचार, सोशल मीडिया तथा विभिन्न तकनीकी माध्यमों के द्वारा हिन्दी का प्रयोग पहले से अधिक सरल और व्यापक हुआ है। "आईआईपीएस दर्पण" भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा उसके व्यावहारिक उपयोग को सुदृढ़ करने का प्रयास है।

किसी भी भाषा को सशक्त बनाने के लिए उसे नई पीढ़ी को सौंपना अत्यंत आवश्यक होता है। यह तभी संभव है जब हम उसे तकनीकी और प्रौद्योगिकी के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाएँ। हिंदी भाषा ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है और आज वह आधुनिक तकनीकी माध्यमों के साथ सफलतापूर्वक अपना स्थान बना रही है।

हम आशा करते हैं कि "आईआईपीएस दर्पण" का यह प्रथम अंक आपको उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक लगेगा। पत्रिका से संबंधित अपने बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं प्रभावी बनाया जा सके।

(सुश्री निवेदिता मिश्रा)
हिंदी अधिकारी

आईआईपीएस के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों का परिचय

डॉ. संजय कुमार मोहंती
निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर, अध्यक्ष

डॉ. मनोज अलगराजन
सदस्य

डॉ. सुनील सरोदे
सदस्य

डॉ. कौशलेंद्र कुमार
सदस्य

श्री अंजनी कुमार मिश्रा
सदस्य

डॉ. मंजिरी राणे
सदस्य

श्री सुदर्शन भद्र
सदस्य

डॉ. अर्चना के रॉय
सदस्य

डॉ. हरिहर साहू
सदस्य

डॉ. दीप्ती गोविल
सदस्य

डॉ. कुणाल केशरी
सदस्य

डॉ. के. प्रवीण कुमार
सदस्य

श्री अनिकेत चट्टोपाध्याय
सदस्य

सुश्री निवेदिता मिश्रा
सदस्य-सचिव

आईआईपीएस की एक झलक

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई को पूर्व में वर्ष 1970 तक जनांकिकीय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र (डीटीसी) के रुप में जाना जाता था और इसकी स्थापना जुलाई 1956 में सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, भारत सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र की संयुक्त प्रायोजकता के अंतर्गत हुई थी। इसकी शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार को आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 1985 में इसका "अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान" के रुप में पुनर्नामकरण किया गया। अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान की स्थापना वर्ष 1956 में जननांकिकीय प्रशिक्षण केंद्र के रूप में हुई थी और इसके पश्चात वर्ष 1985 में इसे 'विश्वविद्यालय समतुल्य' घोषित किया गया एवं इस अवधि के दौरान एक शोध-केंद्रित विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ है। इस मान्यता ने संस्थान को स्वयं मान्यता प्राप्त उपाधि प्रदान करने में मदद की और साथ ही इसने शैक्षणिक संस्था के रुप में संस्थान के भावी विस्तार के लिए मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष 2006 में संस्थान ने अपनी स्वर्ण जयंती मनाई। वर्तमान में 500 से अधिक छात्र-छात्राएँ जनसंख्या विज्ञान के व्यापक क्षेत्र में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। संस्थान ने अपने गौरवशाली यात्रा के 69 वर्ष और "विश्वविद्यालय समतुल्य" के रूप में 40 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं।

वर्ष 1956 में स्थापना के बाद से ही आईआईपीएस एशिया एवं प्रशांत क्षेत्र के विभिन्न देशों से आए हुए प्रशिक्षणार्थियों के लिए जनसंख्या अध्ययन में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में अग्रणी रहा है। इस कार्यक्रम को प्रारंभिक चरण में संयुक्त राष्ट्र एशिया और प्रशांत आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यूएनईएससीएपी) द्वारा वित्तीय सहयोग प्राप्त हुआ, और बाद में इसका समर्थन संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) द्वारा किया गया। प्रारंभ में यह पाठ्यक्रम यूनिस्केप तथा बाद में यूएनएफपीए द्वारा वित्त पोषित था। इस एक वर्ष के कार्यक्रम के माध्यम से संस्थान ने "जनसंख्या अध्ययन में प्रमाणपत्र (सीपीएस)" प्रस्तावित किया जिसे बाद में "जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (डीपीएस)" के रूप पुनर्नामित किया गया। संस्थान ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र के विभिन्न देशों से आए प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया है, जो वर्तमान में जनसंख्या, स्वास्थ्य एवं विकास के क्षेत्र में सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में प्रमुख पदों पर कार्यरत हैं। को प्रशिक्षित किया है, जो वर्तमान में जनसंख्या, स्वास्थ्य एवं विकास के क्षेत्र में सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में प्रमुख पदों पर कार्यरत हैं।शैक्षणिक सत्र 2002–03 से संस्थान ने जनसंख्या अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल.) डिग्री पाठ्यक्रम आरंभ किया, और अब से 637 छात्रों को यह डिग्री प्रदान की जा चुकी है। शैक्षणिक वर्ष 2009–10 से, आईआईपीएस ने उन स्नातक छात्रों के लिए जो जनसंख्या अध्ययन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम करना चाहते हैं, उनके लिए दो वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम अर्थात जनसंख्या अध्ययन में एम.ए./एम.एससी. प्रारंभ किया है। शैक्षणिक वर्ष 2013–14 में, संस्थान ने एक नया दो वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम प्रारंभ किया, अर्थात् जैवसांख्यिकी एवं महामारी विज्ञान में मास्टर ऑफ साइंस, जिसे बाद में जैवसांख्यिकी एवं जनांकिकी में मास्टर ऑफ साइंस (एमबीडी) के रूप में पुनः नामित किया गया।पिछले छह दशकों के दैरान, संस्थान ने जनसंख्या अध्ययन के क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कई संगोष्ठियां तथा सम्मेलन आयोजित किए हैं जो विश्वव्यापी महत्त्व के हैं। संस्थान ने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) जिला स्तरीय परिवार सर्वेक्षण (डीएलएचएस), राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) का मूल्यांकन, भारत में युवा परियोजना, विश्व स्तरीय युवा तम्बाकू सर्वेक्षण (जीएटीएस भारत परियोजना), यौन स्वास्थ्य में शोध तथा 'इंटरवेंशन':कार्रवाई का सिद्धांत (रिश्ता परियोजना), पोषण सर्वेक्षण और भारत में अनुदैर्घ्य वयोवृद्धि अध्ययन (लासी) जैसे कई प्रमुख सर्वेक्षण संचालित किए हैं।

संस्थान में सात शैक्षणिक विभाग हैं। संकाय सदस्य तथा सहायक कर्मचारी जनसंख्या विज्ञान के कुछ मुख्य क्षेत्रों में विशेषज्ञता के साथ विविध अंतः विषय पृष्ठभूमि से संबंधित हैं और भारत या विदेश से प्रशिक्षित हैं।

संस्थान भारत में जनसंख्या तथा स्वास्थ्य से संबंधित अध्यापन तथा शोध का केंद्र है जो देश की योजना और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पिछले वर्षों के दौरान, एशिया और प्रशांत क्षेत्र, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका के विभिन्न देशों के छात्रों ने संस्थान में प्रशिक्षण लिया है। संस्थान के पूर्व छात्र राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों तथा प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठनों में प्रतिष्ठित पदों पर सेवारत हैं। अध्यापन तथा शोध गतिविधियों के अलावा, संस्थान सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों को परामर्शी सेवाएं भी प्रदान करता है।

संस्थान ने 419 अभ्यर्थियों को पीएच.डी. की डिग्री प्रदान की है, जिनमें 11 विदेशी अभ्यर्थी भी शामिल हैं। 1988-89 में, संस्थान ने "जनसंख्या अध्ययन में मास्टर (एमपीएस)" नामक एक वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम की शुरुआत की। अब तक, संस्थान ने 878 छात्रों को एमपीएस डिग्री प्रदान की है। संस्थान ने 1994–95 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से मास्टर कार्यक्रम की शुरुआत की थी, और अब से 496 छात्रों को इस प्रणाली के तहत डिग्री प्रदान की जा चुकी है। आईआईपीएस स्वास्थ्य शिक्षा संवर्धन (डीएचपीई) में डिप्लोमा, जन स्वास्थ्य देखभाल (पीजीडीसीएच) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और अस्पताल प्रबंधन (पीजीडीएचएम) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी प्रदान करता है। यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य और अनुसंधान संस्थान, मुंबई द्वारा आयोजित किए जाते हैं, जो आईआईपीएस से संबद्ध है। स्वास्थ्य शिक्षा में एक वर्षीय डिप्लोमा (डीएचई) अगस्त 1987 में प्रारंभ किया गया था और बाद में 2001-02 में इसे स्वास्थ्य प्रचार शिक्षा डिप्लोमा (डीएचपीई) के नाम से पुनः नामित किया गया। अब तक कुल 710 छात्रों को स्वास्थ्य प्रचार शिक्षा डिप्लोमा (डीएचपीई) प्रदान किया जा चुका है, जिनमें 28 विदेशी छात्र भी सम्मिलित हैं।ष दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन भी किया गया।

जन स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की शुरुआत वर्ष 2006-07 में की गई थी, और अब तक कुल 67 छात्रों को यह डिप्लोमा प्रदान किया जा चुका है। संस्थान की प्रमुख गतिविधियाँ शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्शात्मक सेवाएँ तथा प्रलेखन के रूप में वर्गीकृत की जा सकती हैं।

इसी क्रम में, संस्थान में इस वर्ष दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन भी किया गया।

गतिविधियां

आईआईपीएस द्वारा भारत सरकार के राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य अभियान 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान' के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2025 तक महिलाओं के स्वास्थ्य पर केंद्रित स्वास्थ्य जांच शिविरों एवं जागरूकता कार्यक्रमों का व्यापक रूप से आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण पहल के लिए आईआईपीएस में डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर को नोडल अधिकारी के रूप में दायित्व सौंपा गया, जिन्होंने समस्त गतिविधियों के समन्वयन एवं सफल क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) द्वारा किया गया। इस क्रम में 17 सितंबर, 2025 को संस्थान में सामान्य स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। तत्पश्चात, 24 सितंबर, 2025 को आईआईपीएस ने पीएचसी, नेरल के सहयोग से रायगढ़ के भडवल गांव में महिलाओं के लिए स्वास्थ्य आकलन शिविर एवं एक जागरूकता सत्र आयोजित किया। इसी कड़ी में 30 सितंबर, 2025 को गोवंडी एजुकेशन सोसाइटी (आर.एस.टी. माध्यमिक विद्यालय) में स्कूली विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर एवं जागरूकता सत्र का भी आयोजन किया गया। डॉ. रोहिणी वी. आंबेकर एवं डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर ने आईआईपीएस की चिकित्सकीय टीम के साथ मिलकर आईआईपीएस, भडवल गांव तथा आर.एस.टी. माध्यमिक विद्यालय में स्वास्थ्य जांच कार्य संपन्न किया, जिसमें सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित किया गया। इस अभियान के अंतर्गत कुल 445 लाभार्थियों—जिनमें आईआईपीएस के कर्मचारी एवं छात्र, भडवल गांव के निवासी तथा स्कूली विद्यार्थी शामिल थे—को स्क्रीनिंग एवं स्वास्थ्य जांच की सुविधाएं प्रदान की गईं।

इस पहल का समापन 1 अक्टूबर, 2025 को आहार विशेषज्ञ सुश्री प्रिया पलन द्वारा "पोषण" विषय पर दिए गए व्याख्यान के साथ हुआ। इसके पश्चात आईआईपीएस के डॉ. चंद्र शेखर एवं डॉ. रोहिणी वी. आंबेकर ने अपने विचार व्यक्त किए तथा कार्यक्रम का समापन छात्र सहयोगियों के सम्मान समारोह के साथ संपन्न हुआ।

आईआईपीएस द्वारा भारत सरकार के राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य अभियान 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान' के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2025 तक महिलाओं के स्वास्थ्य पर केंद्रित स्वास्थ्य जांच शिविरों एवं जागरूकता कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस महत्वपूर्ण पहल के लिए डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर को संस्थान स्तर पर नोडल अधिकारी के रूप में दायित्व सौंपा गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो. दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) द्वारा किया गया। 30 सितंबर, 2025 को गोवंडी एजुकेशन सोसाइटी (आर.एस.टी. माध्यमिक विद्यालय) में स्कूली छात्रों हेतु एक सुव्यवस्थित स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के अंतर्गत पोषण मूल्यांकन (ऊंचाई एवं वजन), ईएनटी जांच, दंत परीक्षण तथा एनीमिया की नैदानिक जांच जैसी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं, जिससे विद्यार्थियों के समग्र स्वास्थ्य का आकलन संभव हो सका। इसी क्रम में, आईआईपीएस की डॉ. शिरीन जे. जेजीभॉय एवं डॉ. अपराजिता चट्टोपाध्याय द्वारा छात्राओं के लिए "मासिक धर्म जागरूकता एवं स्वच्छता" विषय पर एक अत्यंत उपयोगी एवं संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया।

सत्र में मासिक धर्म की वैज्ञानिक समझ विकसित करने, उससे जुड़े मिथकों एवं भ्रांतियों का निराकरण करने, सामाजिक वर्जनाओं पर विचार-विमर्श करने तथा मासिक धर्म उत्पादों के सुरक्षित एवं सही उपयोग पर विशेष बल दिया गया। साथ ही, जल, स्वच्छता एवं स्वच्छता व्यवहार से संबंधित चुनौतियों एवं मासिक धर्म प्रबंधन की वर्तमान पहलों पर भी प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर छात्राओं को अपने अनुभव साझा करने तथा मासिक धर्म से जुड़े स्वास्थ्य संबंधी प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्हें व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने के व्यावहारिक उपायों से अवगत कराया गया, जिससे उनमें आत्मविश्वास एवं जागरूकता का संचार हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत सभी प्रतिभागी छात्राओं को स्वच्छता किट तथा व्यक्तिगत स्वास्थ्य परामर्श प्रदान किया गया, जिसके माध्यम से एक संवेदनशील, सहयोगात्मक एवं जागरूक वातावरण का सृजन सुनिश्चित हुआ।डॉ. रोहिणी वी. आंबेकर एवं डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर ने आईआईपीएस की चिकित्सकीय टीम के साथ मिलकर आर.एस.टी. माध्यमिक विद्यालय में स्वास्थ्य जांच कार्य संपन्न किया, जिसमें सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित किया गया। इस दौरान छात्र सहयोगियों ने सभी गतिविधियों के सफल संचालन में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय योगदान दिया। आईआईपीएस द्वारा भारत सरकार के राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य अभियान 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान' के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2025 तक महिलाओं के स्वास्थ्य पर केंद्रित स्वास्थ्य जांच शिविरों एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस पहल के लिए आईआईपीएस में डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर को नोडल अधिकारी के रूप में दायित्व सौंपा गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) द्वारा किया गया। आयोजन दल में आईआईपीएस के संकाय सदस्य डॉ. लक्ष्मी के. द्विवेदी, डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर तथा डॉ. सुरेश जुनगरी सम्मिलित थे।

आईआईपीएस ने पीएचसी, नेरल के सहयोग से 24 सितंबर, 2025 को रायगढ़ के भडवल गांव में महिलाओं के लिए एक स्वास्थ्य आकलन शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में पोषण मूल्यांकन (ऊंचाई एवं वजन), रक्तचाप, रैंडम ब्लड ग्लूकोज़ तथा हीमोग्लोबिन (एनीमिया जांच) जैसी महत्वपूर्ण जांचें शामिल थीं।

डॉ. नितिन गुराव (तालुका स्वास्थ्य अधिकारी, कर्जत) ने स्वास्थ्य के महत्व पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया, तथा डॉ. संगीता मेडी (चिकित्सा अधिकारी, पीएचसी, नेरल) ने "पोषण एवं महिला स्वास्थ्य" विषय पर एक उपयोगी सत्र प्रस्तुत किया। आयोजन दल में आईआईपीएस के संकाय सदस्य डॉ. लक्ष्मी के. द्विवेदी, डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर, डॉ. सुरेश जुनगरी तथा डॉ. प्रदीप एस. साल्वे सम्मिलित थे।

डॉ. रोहिणी वी. आंबेकर एवं डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर ने आईआईपीएस की चिकित्सकीय टीम के साथ मिलकर भडवल गांव में स्वास्थ्य जांच कार्य संपन्न किया, जिसमें सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित किया गया।

आईआईपीएस ने नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत जागरूकता प्रसार के उद्देश्य से 17 अक्टूबर, 2025 को आईआईपीएस के खेल मैदान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन

आईआईपीएस ने नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत जागरूकता प्रसार के उद्देश्य से 17 अक्टूबर, 2025 को आईआईपीएस के खेल मैदान में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया।कार्यक्रम का उद्घाटन प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) तथा प्रोफेसर चंद्र शेखर द्वारा किया गया। प्रोफेसर अपराजिता चट्टोपाध्याय (एनईपी समन्वयक), डॉ. सारंग पी. पेडगांवकर (स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान समन्वयक) तथा डॉ. कुणाल केशरी (एनईपी सारथी समन्वयक) ने नई शिक्षा नीति 2020 के परिवर्तनकारी पहलुओं पर प्रकाश डाला।

"एनईपी सारथी के छात्र सहयोगियों श्री अंकित गुप्ता, सुश्री हर्षा शायजिलिन तथा सुश्री सयंतनी दास मजूमदार ने कार्यक्रम के सुचारु समन्वयन में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय सहयोग प्रदान किया। प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक में "नारी शिक्षा, नई शिक्षा, नई उड़ान", "अपनी भाषा, अपना ज्ञान", "महिला सशक्तिकरण" तथा "अलखशक्ति (समावेशी शिक्षा)" जैसे चार प्रमुख विषयों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया, जिसने विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के मध्य चिंतन एवं संवाद को प्रोत्साहित किया। यह आयोजन नई शिक्षा नीति 2020 के परिवर्तनकारी उद्देश्यों के अनुरूप जागरूकता, सृजनात्मकता एवं सहभागिता को प्रोत्साहित करने की दिशा में आईआईपीएस की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ रूप से प्रतिपादित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) में 'सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी' विषय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) में 'सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी' विषय पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन 27 अक्टूबर से 2 नवंबर, 2025 तक किया गया, जो 18 अगस्त से 17 नवंबर, 2025 तक चले त्रैमासिक अभियान का एक हिस्सा था। इस अवसर के अंतर्गत 27 अक्टूबर, 2025 को प्रातः 11:00 बजे संस्थान के सभी संकाय सदस्यों, स्टाफ सदस्यों को नागरिकों एवं संगठन हेतु निर्धारित सत्यनिष्ठा शपथ दिलाई गई। यह शपथ प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) तथा प्रोफेसर अर्चना के. रॉय, सतर्कता अधिकारी द्वारा दिलाई गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन का उद्देश्य सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बढ़ावा देना था, साथ ही सभी संकाय सदस्यों, स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों को अपने व्यावसायिक कर्तव्यों के निर्वहन में ईमानदारी एवं नैतिक आचरण के उच्चतम मानकों का पालन करने के लिए प्रेरित करना था।

रटगर्स, द स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू जर्सी के प्रतिनिधिमंडल का आईआईपीएस दौरा – 13 नवंबर, 2025

रटगर्स, द स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू जर्सी के एक प्रतिनिधिमंडल ने 13 नवंबर, 2025 को संस्थान का दौरा किया। डॉ. जॉर्ज लीबोविट्ज़, अधिष्ठाता एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर के नेतृत्व में आए इस प्रतिनिधिमंडल में डॉ. लिया नोवर, शामिल थे।

इस प्रतिनिधिमंडल में डॉ. लिया नोवर, अनुसंधान के लिए एसोसिएट अधिष्ठाता एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, डॉ. मोहिनी मुखर्जी, रटगर्स ग्लोबल में वैश्विक मामलों की सहायक उपाध्यक्ष तथा श्री विवेक मनसुखानी, आईआईई, भारत के प्रमुख शामिल थे। अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रकोष्ठ के कार्यालय द्वारा इस दौरे का आयोजन किया गया।

आईआईपीएस के निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) प्रो. दे. अ. नागदेवे, प्रो. उदय शंकर मिश्रा, डॉ. टी. आर. दिलीप एवं सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक) ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया। संकाय सदस्यों एवं डॉक्टरेट शोधार्थियों के साथ आयोजित संवादात्मक सत्र में शैक्षणिक आदान-प्रदान, शोध सहयोग तथा नवाचार पहलों सहित विभिन्न सहयोग के अवसरों पर चर्चा की गई। इस दौरान पारस्परिक रुचि के क्षेत्रों एवं संयुक्त शोध तथा छात्र-संकाय आदान-प्रदान की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया, जिससे भविष्य में सहयोग के लिए सकारात्मक संभावनाएँ बनीं।

इस दौरे का समापन धन्यवाद ज्ञापन एवं समूह छायाचित्र के साथ हुआ, जो दोनों संस्थानों के बीच एक आशाजनक साझेदारी की शुरुआत का प्रतीक रहा।

मावा–समभाव फिल्म महोत्सव (22–23 नवंबर 2025)

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) की आंतरिक समिति (आईसी), जनांकिकी एवं लैंगिक अध्ययन केंद्र (सीडीजी) तथा मावा के संयुक्त सहयोग से 22–23 नवंबर 2025 को "समभाव (सभी के लिए समानता)" फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया।

इस दो दिवसीय महोत्सव का उद्देश्य फिल्मों और डॉक्यूमेंट्रीज़ के माध्यम से लैंगिक समानता, समावेशन, पहचान, पुरुषत्व, यौनिकता और हिंसा निवारण जैसे विषयों पर संवाद को बढ़ावा देना था। महोत्सव में कुल 13 फिल्मों का प्रदर्शन किया गया, जिनके साथ संवादात्मक चर्चाएँ भी आयोजित की गईं।

संस्थान में राजभाषा तिमाहियों में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने तथा स्टाफ सदस्यों की भाषा-संबंधी दक्षता में वृद्धि के उद्देश्य से वर्ष की सभी चारों तिमाहियों में राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएँ संस्थान के कार्मिकों के लिए आयोजित की गईं, जिनमें कुल 56 प्रतिभागियों ने सक्रिय सहभागिता की।

इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 से संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधानों की जानकारी प्रदान करना था।

साथ ही, डिजिटल माध्यमों में हिन्दी के प्रयोग को सरल और प्रभावी बनाने हेतु "सामर्थ्य टूल", यूनिकोड टाइपिंग तथा ई-ऑफिस में उपलब्ध विभिन्न टेम्पलेट्स के व्यावहारिक उपयोग के बारे में प्रतिभागियों को विस्तार पूर्वक अवगत कराया गया।

कार्यशालाओं के माध्यम से प्रतिभागियों को दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया, जिससे संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन को और सुदृढ़ करने में सहायता मिली।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा दसवें राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 29–30 दिसंबर 2025 को राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा दसवें राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में संस्थान की ओर से राजभाषा प्रभारी प्रोफेसर डॉ. मुरली धर, हिन्दी अधिकारी सुश्री निवेदिता मिश्रा तथा प्रवर श्रेणी लिपिक श्री रामखेलावन यादव ने सहभागिता की।

सम्मेलन के दौरान राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन, प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग, डिजिटल माध्यमों में हिन्दी के उपयोग तथा राजभाषा संबंधी विभिन्न नीतिगत एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई। इस सम्मेलन ने विभिन्न संस्थानों के मध्य अनुभवों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान किया तथा राजभाषा हिन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन को और सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नवी मुंबई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 42वीं छमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 19 नवंबर 2025 को नवी मुंबई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 42वीं छमाही बैठक नराकास-अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोंकण रेलवे, श्री संतोष झा की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुईं। इस बैठक में राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की गई तथा आगामी कार्य-योजना पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक का शुभारंभ स्वागत भाषण के साथ हुआ, जिसके पश्चात विभिन्न राजभाषा संबंधी गतिविधियों पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर नराकास की पत्रिका 'समन्वय' के 37वें अंक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा के प्रति उत्साह व्यक्त किया।

बैठक में नराकास द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता स्टाफ सदस्यों को अध्यक्ष महोदय श्री संतोष झा तथा गृह मंत्रालय के प्रतिनिधियों के कर-कमलों से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक, ने मदवार कार्यक्रम सूची, पिछले राजभाषा संबंधी कार्यों तथा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रस्तुत छमाही रिपोर्टों की गहन समीक्षा की।कार्यक्रम के दौरान सुश्री गार्गी गाड़गील, सहायक निदेशक (पश्चिम), गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा प्रशिक्षण व्यवस्था पर विस्तृत प्रस्तुति दी गई। इसके अतिरिक्त, सुश्री कुसुम शर्मा, सहायक निदेशक, अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय ने अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

बैठक के दौरान श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने सभी सदस्य कार्यालयों को यह निर्देश दिया कि प्रत्येक छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख की उपस्थिति अनिवार्य है, क्योंकि उपस्थिति संबंधी विवरण ऑनलाइन अपलोड किया जाता है तथा इसकी जानकारी उच्च स्तर तक प्रेषित की जाती है।

नराकास की 42वीं छमाही बैठक में हमारे संस्थान की ओर से कार्यालय प्रमुख के स्थान पर राजभाषा प्रभारी प्रोफेसर डॉ. मुरली धर तथा हिन्दी अधिकारी सुश्री निवेदिता मिश्रा ने सहभागिता की।
बैठक का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इन बैठकों ने राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन तथा सदस्य कार्यालयों के मध्य समन्वय को और सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन : 13 जनवरी 2026

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान द्वारा दिनांक 13 जनवरी 2026 को अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान में निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) डॉ. दे. अ. नागदेवे तथा प्रोफेसर एवं राजभाषा प्रभारी डॉ. मुरली धर की गरिमामयी उपस्थिति में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) डॉ. दे. अ. नागदेवे द्वारा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ राजभाषा से संबंधित नियमों एवं आदेशों के प्रभावी अनुपालन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। वहीं प्रोफेसर एवं राजभाषा प्रभारी डॉ. मुरली धर ने हिंदी के विकास तथा वैश्विक स्तर पर हिंदी के बढ़ते महत्व और प्रभाव पर प्रकाश डाला।

उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें निर्णायक मंडल की भूमिका में डॉ. मुरली धर के साथ सहायक प्रोफेसर सुश्री प्रीति ढिल्लों एवं सहायक प्रोफेसर श्री कुणाल केशरी उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता में संस्थान के स्टाफ सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के संकाय सदस्य, स्टाफ सदस्य एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

गणतंत्रता दिवस का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई में 26 जनवरी, 2026 को भारत का 77वां गणतंत्र दिवस उत्साह, देशभक्ति एवं गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान परिसर में ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक, संकाय सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। इस अवसर पर संविधान के मूल्यों, राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः स्मरण किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान द्वारा 'स्पोर्टिफाई-26' के अंतर्गत खेल सप्ताह 2026 का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) द्वारा 'स्पोर्टिफाई-26' के अंतर्गत खेल सप्ताह 2026 का आयोजन 22 जनवरी से 29 जनवरी 2026 तक किया गया, सभी कार्मिकों एवं छात्रों के लिए सप्ताहभर विभिन्न इनडोर एवं आउटडोर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों एवं कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए खेल भावना और टीमवर्क का परिचय दिया। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान की छात्र परिषद द्वारा खेल समन्वयक डॉ. प्रदीप एस. साल्वे के मार्गदर्शन में आईआईपीएस वार्षिक खेल सप्ताह "स्पोर्टिफाई-26" के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन पुस्तकालय भवन के तृतीय तल पर किया गया। इस समारोह में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया तथा उनकी मेहनत, टीम भावना एवं खेल भावना की सराहना की गई। यह कार्यक्रम खेल सप्ताह के सफल समापन का प्रतीक रहा, जिसने छात्रों के समग्र विकास एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहित करने के प्रति आईआईपीएस की प्रतिबद्धता को दर्शाया।

आंतरिक समिति द्वारा "ब्रेकिंग द साइलेंस : लेट्स टॉक अबाउट सेक्सुअल हैरेसमेंट 2.0" कार्यक्रम का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई की आंतरिक समिति (आईसी) द्वारा 25 एवं 26 फरवरी 2026 को "ब्रेकिंग द साइलेंस : लेट्स टॉक अबाउट सेक्सुअल हैरेसमेंट 2.0" कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह सत्र महिला एवं पुरुष छात्रों के लिए पृथक रूप से आयोजित किए गए, ताकि कार्यस्थल पर महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध एवं प्रतितोष) अधिनियम, 2013 के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके तथा संस्थान की शिकायत निवारण प्रणाली के संबंध में समझ को सुदृढ़ किया जा सके। कार्यक्रम में अधिनियम के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं, जैसे आंतरिक समिति की भूमिका एवं कार्य, शिकायत प्रस्तुत करने की समय-सीमा तथा अनुशासनात्मक प्रक्रिया आदि पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान परामर्श मनोवैज्ञानिक एवं मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ सुश्री प्रीति ठक्कर ने छात्रों को संबोधित किया।

उन्होंने अनुचित व्यवहार के मानसिक प्रभावों के बारे में जानकारी दी तथा मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत सीमाओं और आपसी सम्मान के महत्व पर बल दिया। सत्रों का समापन संवादात्मक चर्चाओं के साथ हुआ। इस अवसर पर सुरक्षित, सम्मानजनक एवं समावेशी शैक्षणिक वातावरण बनाए रखने के प्रति आईआईपीएस की प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित किया गया।

सेमिनार/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएं

एम.ए. (दूरस्थ शिक्षा) कार्यक्रम के शिक्षार्थियों के लिए संपर्क कार्यक्रम – 6 -19 नवंबर, 2025, आईआईपीएस, मुंबई दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सीडीओई) द्वारा एम.ए. (जनसंख्या अध्ययन) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के शिक्षार्थियों के लिए 6 नवंबर, 2025 से 19 नवंबर, 2025 तक ऑनलाइन माध्यम से संपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. धनंजय डब्ल्यू. बंसोड़, प्रोफेसर एवं सीडीओई प्रमुख ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रो. दे. अ. नागदेवे, निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) ने सत्र की अध्यक्षता की तथा उद्घाटन संबोधन दिया। सीडीओई के वरिष्ठ शोध अधिकारी डॉ. ऋषिकेश पी. खडसे ने सत्र का संचालन किया। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों के लिए व्याख्यान दिए गए। दो सप्ताह की अवधि तक चले इस संपर्क कार्यक्रम में कुल 38 छात्रों ने भाग लिया।

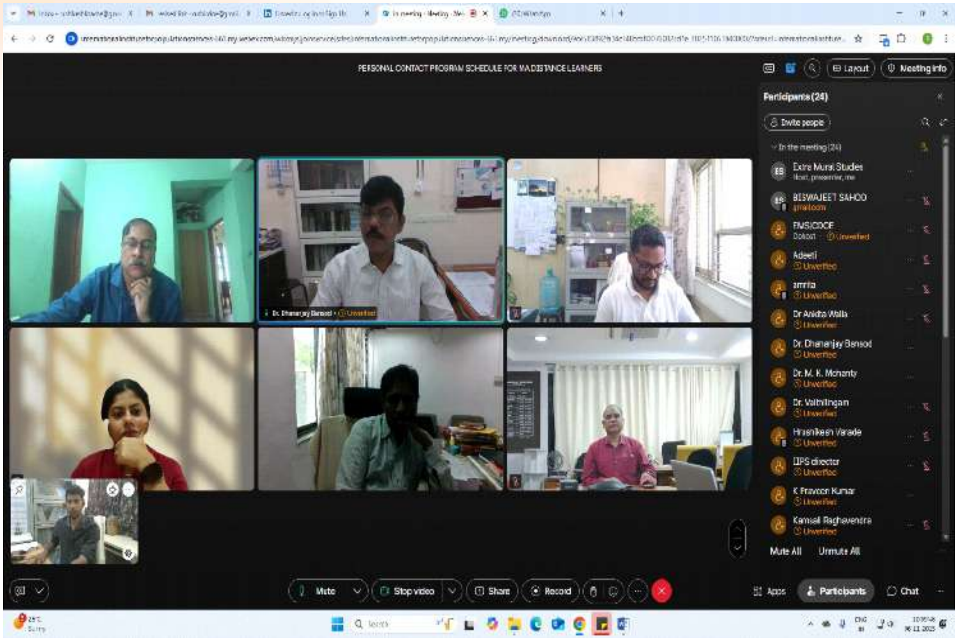

सीडीजी द्वारा आईआईपीएस राष्ट्रीय संगोष्ठी 2025 से पूर्व कार्यशाला का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई के लैंगिक जनांकिकी केंद्र (सीडीजी) द्वारा 30वें राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर 16 दिसंबर, 2025 को तिरुवनंतपुरम, केरल में "डाटा के माध्यम से लैंगिकता को समझना" विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन-पूर्व प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईआईपीएस के निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) डॉ. देवराम अ. नागदेवे तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. आर. नागराजन के उद्घाटन संबोधन से हुआ। दोनों वक्ताओं ने लैंगिकता से संबंधित शोध के महत्व एवं वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। सीडीजी की प्रमुख डॉ. अर्चना के. रॉय ने कार्यशाला के विषय का परिचय देते हुए इसके उद्देश्यों को स्पष्ट किया। उन्होंने लैंगिकता को समझने के लिए सैद्धांतिक दृष्टिकोण के साथ-साथ डाटा आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम को चार सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम सत्र का संचालन डॉ. सुनील सरोदे ने किया, जिसमें लैंगिक मानदंडों, द्विआधारी अवधारणाओं तथा अन्य श्रेणी के पहचान की व्याख्या सहित लैंगिकता के सैद्धांतिक पहलुओं पर चर्चा की गई। द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. मानस रंजन प्रधान ने किया, जिसमें लैंगिकता के अनुभवजन्य मापन तथा वैश्विकलैंगिक सूचकांकों पर चर्चा की गई। तृतीय सत्र में डॉ. प्रीति ढिल्लों ने भारत में उपलब्ध प्रमुख लैंगिक डाटा स्रोतों, जैसे जनगणना, एनएफएचएस, आईएचडीएस एवं एनएसएसओ का परिचय दिया तथा शोध के लिए उनकी उपयोगिता समझाई। अंतिम सत्र में स्टाटा सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। डॉ. कुणाल केशरी एवं डॉ. श्रीनिवास गोली ने प्रतिभागियों को एनएफएचएस डाटा के विश्लेषण तथा लैंगिक असमानता से संबंधित सूचकांक तैयार करने में मार्गदर्शन दिया, जिससे प्रतिभागी वास्तविक डाटा पर विश्लेषणात्मक उपकरणों का उपयोग कर सके।

इस कार्यशाला के प्रति प्रतिभागियों में काफी रुचि देखी गई और कुल 58 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से लैंगिक शोध के प्रति उनकी रुचि एवं प्रेरणा के आधार पर 30 प्रतिभागियों का चयन किया गया। चयनित प्रतिभागियों में एम.ए./एम.एससी. एवं पीएच.डी. के छात्र-छात्राओं के साथ-साथ कुछ सरकारी अधिकारी भी शामिल थे, जो भारत के विभिन्न शैक्षणिक विषयों एवं संस्थानों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

विशेष रूप से, अधिकांश प्रतिभागी महिलाएँ थीं, जो लैंगिक विषयों के प्रति उनकी सक्रिय भागीदारी को दर्शाता है। कार्यशाला के सफल आयोजन एवं वित्तपोषण में उदार सहयोग प्रदान करने के लिए आईआईपीएस, संगोष्ठी आयोजन समिति तथा बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के प्रति उनके अमूल्य सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया गया। डॉ. अर्चना ने सत्र का संचालन किया तथा डॉ. लइक सिद्दकी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आईआईपीएस राष्ट्रीय संगोष्ठी 2025

भारत वर्तमान में जनांकिकीय संक्रमण के अग्रणी चरण में है, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों में असमान प्रगति, विविध क्षेत्रीय प्रतिरूप तथा विशिष्ट नीतिगत चुनौतियाँ देखने को मिल रही हैं। इन सतत चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) द्वारा 17–19 दिसंबर 2025 के दौरान तिरुवनंतपुरम में "जनांकिकीय एवं स्वास्थ्य संक्रमण : चुनौतियाँ और अवसर" विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी ने जनांकिकीय एवं स्वास्थ्य संक्रमण से संबंधित चुनौतियों और अवसरों पर नवोन्मेषी शोध प्रस्तुत करने एवं विचार-विमर्श के लिए एक प्रभावी मंच प्रदान किया। संगोष्ठी में लगभग 120 शोधकर्ता एवं आमंत्रित विशेषज्ञों ने सहभागिता की तथा अपने महत्वपूर्ण शोध निष्कर्षों एवं पद्धतिगत अनुभवों को साझा किया। विभिन्न विषयगत पृष्ठभूमियों, भौगोलिक क्षेत्रों तथा करियर के विविध चरणों से आए शोधकर्ताओं एवं विशेषज्ञों ने इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की दिशाओं पर सार्थक संवाद किया। संगोष्ठी के अंतर्गत कुल 15 तकनीकी सत्र तथा दो पोस्टर सत्र आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त, जनांकिकीय एवं स्वास्थ्य संक्रमण के विभिन्न आयामों पर तीन पूर्णाधिवेशन सत्र भी आयोजित हुए। संगोष्ठी में जनांकिकीय परिवर्तन एवं जनसंख्या संरचना, युवा एवं रोजगार, स्वास्थ्य प्रणाली, लैंगिक मुद्दे, प्रवासन, शहरीकरण तथा क्षेत्रीय असंतुलन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेष रूप से चर्चा की गई। प्रस्तुत अधिकांश शोध-पत्रों में इन विषयों से संबंधित विशिष्ट चुनौतियों एवं संभावनाओं को रेखांकित किया गया। संगोष्ठी का समन्वयन प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार), प्रोफेसर आर. नागराजन, डॉ. हरिहर साहू, डॉ. श्रीनिवास गोली, डॉ. मानस प्रधान, डॉ. सूर्यकांत यादव, डॉ. रेशमी आर. एस. तथा डॉ. पी. मुरुगेशन (संगोष्ठी सचिव) द्वारा किया गया।

15वाँ प्रोफेसर आशा ए. भेंडे स्मृति व्याख्यान

15वाँ प्रोफेसर आशा ए. भेंडे स्मृति व्याख्यान दिनांक 28 जनवरी 2026 को अपराह्न 2:30 बजे से 4:00 बजे तक आईआईपीएस के पुस्तकालय भवन की तृतीय मंजिल पर आयोजित किया गया। महाराष्ट्र की पूर्व मुख्य सचिव सुश्री सुजाता सौनिक द्वारा "महिला सशक्तिकरण – प्रमुख विचार" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं अतिथियों के स्वागत के साथ हुआ। आईआईपीएस के निदेशक प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे ने स्वागत भाषण दिया तथा प्रोफेसर यू. एस. मिश्रा ने वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान सुश्री सुजाता सौनिक को पुष्पगुच्छ, स्मृति-चिह्न एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

स्मृति व्याख्यान के अंतर्गत प्रोफेसर टी. वी. शेखर ने प्रोफेसर आशा ए. भेंडे को स्मरण करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के दौरान निदेशक द्वारा प्रोफेसर आशा ए. भेंडे की पुत्री सुश्री पूर्णिमा का संदेश भी पढ़कर सुनाया गया, जिसने कार्यक्रम को भावनात्मक स्वर प्रदान किया। अपने व्याख्यान में सुश्री सुजाता सौनिक ने अपने प्रशासनिक अनुभवों के आधार पर महिला सशक्तिकरण से संबंधित महत्वपूर्ण विचार साझा किए। सत्र के अंत में प्रोफेसर दे. अ. नागदेवे द्वारा चर्चा का संचालन किया गया तथा प्रकाशन कक्ष की ओर से श्री दीपु ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। यह स्मृति व्याख्यान लैंगिक समानता, नेतृत्व तथा सामाजिक विकास जैसे विषयों पर विचार-विमर्श का एक सार्थक मंच सिद्ध हुआ।

जनसंख्या-स्तर पर पारिवारिक संबंधों की संरचना के विश्लेषण का परिचय”
विषयक कार्यशाला, 24–27 नवंबर 2025

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई द्वारा मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर डेमोग्राफिक रिसर्च के सहयोग से 24 से 27 नवंबर, 2025 तक आईआईपीएस, मुंबई में “जनसंख्या-स्तरीय पारिवारिक संबंध संरचनाओं के विश्लेषण का परिचय” विषय पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को परिवार एवं पारिवारिक संबंधों की जनांकिकी में हो रहे नवीन विकासों से परिचित कराना तथा जनांकिकीय पद्धतियों एवं कंप्यूटर-आधारित उपकरणों की सहायता से जनसंख्या-स्तरीय पारिवारिक संबंध संरचनाओं के विश्लेषण हेतु वैचारिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था।

इस कार्यशाला में विभिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमियों से आए 19 छात्रों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों की जनांकिकीय अनुसंधान के संदर्भ में पारिवारिक संबंधों के नेटवर्क, जनांकिकीय सूक्ष्म अनुकरण, अंतरपीढ़ीगत संबंधों तथा परिवार संरचनाओं की समझ को सुदृढ़ करना था। प्रतिभागियों को पारिवारिक संबंधों के विश्लेषण तथा जनसंख्या अध्ययन में प्रयुक्त सैद्धांतिक रूपरेखाओं एवं कार्यप्रणालीगत दृष्टिकोणों से परिचित कराया गया।

इस कार्यशाला के सत्रों का संचालन मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर डेमोग्राफिक रिसर्च (एमपीआईडीआर), जर्मनी के डॉ. डिएगो अल्बुरेज़-गुटिएरेज़ तथा डॉ. सरोजा अधिकारी सहित प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान, संवादात्मक चर्चाओं तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें पारिवारिक संबंधों के आकलन की तकनीकों, जनांकिकीय मॉडलिंग तथा जनांकिकीय अनुसंधान में कंप्यूटर-आधारित अनुप्रयोगों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। प्रतिभागियों ने सांख्यिकीय एवं जनांकिकीय उपकरणों की सहायता से पारिवारिक संबंध संरचनाओं के विश्लेषण का व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया।

कार्यशाला का समापन सत्र 27 नवंबर, 2025 को आयोजित किया गया। डॉ. श्रीनिवास गोली ने कार्यक्रम का परिचय प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् आईआईपीएस के निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) प्रो. दे. अ. नागदेवे तथा प्रो. टी. वी. शेखर ने समापन संबोधन दिया। संसाधन व्यक्तियों डॉ. डिएगो अल्बुरेज़-गुटिएरेज़ तथा डॉ. सरोजा अधिकारी ने समापन टिप्पणी प्रस्तुत की और कार्यशाला में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी एवं प्राप्त सीख पर अपने विचार साझा किए। प्रो. यू. एस. मिश्रा ने प्रतिभागियों के अनुभव एवं प्रतिक्रिया सत्र का समन्वय किया, जिसमें प्रतिभागियों ने कार्यशाला के दौरान प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव साझा किए। प्रतिभागियों को प्रो. दे. अ. नागदेवे तथा डॉ. डिएगो अल्बुरेज़-गुटिएरेज़ द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। सुश्री शुभ्रा कृति ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यशाला ने छात्रों एवं शोधकर्ताओं को पारिवारिक संबंध संरचनाओं से संबंधित उन्नत जनांकिकीय अवधारणाओं से परिचित होने का एक महत्त्वपूर्ण मंच प्रदान किया। साथ ही, इसने जनांकिकीय अनुसंधान के क्षेत्र में आईआईपीएस और एमपीआईडीआर के मध्य शैक्षणिक सहयोग को और अधिक सुदृढ़ किया।

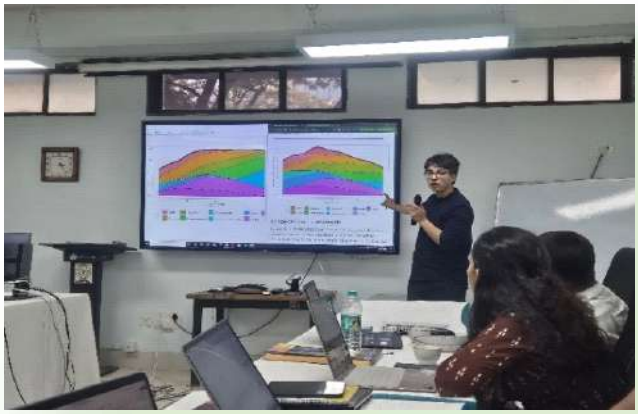

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान में "मशीन लर्निंग एवं डेटा साइंस परिप्रेक्ष्य" विषय पर दो दिवसीय व्याख्यान-सह-कार्यशाला का सफल आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान में "मशीन लर्निंग एवं डेटा साइंस परिप्रेक्ष्य" विषय पर दो दिवसीय व्याख्यान-सह-कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के सत्र डॉ. प्रशांत वर्मा द्वारा संचालित किए गए, जिनमें उन्होंने "डेटा से ज्ञान की खोज : मशीन लर्निंग एवं डेटा माइनिंग परिप्रेक्ष्य" विषय पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए तथा मशीन लर्निंग एवं डेटा साइंस के व्यावहारिक एवं कार्यक्षेत्र से संबंधित अनुप्रयोगों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।कार्यशाला का आयोजन सत्र अध्यक्ष प्रोफेसर नंदिता शइकीया के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिनके सहयोग एवं प्रोत्साहन ने कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आयोजकों ने श्रीनिवास गोली, गुरु वशिष्ठ तथा कुणाल केशरी के मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं गरिमामयी उपस्थिति के लिए भी हार्दिक आभार व्यक्त किया।साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान पूर्व छात्र संघ (आईआईपीएसएए) के सहयोग एवं सहभागिता के लिए विशेष आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में छात्रों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की, जिससे कार्यशाला अत्यंत जीवंत एवं सफल रही। कार्यशाला के सुचारु एवं सफल आयोजन में प्लेसमेंट सेल, अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान की टीम तथा छात्र सहयोगियों के समर्पण, उत्कृष्ट समन्वय एवं अथक परिश्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

"भारत में देर से होने वाली भ्रूणीय एवं नवजात मृत्यु की वस्तुस्थिति एवं प्रवृत्तियाँ" विषय पर शैक्षणिक संगोष्ठी

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) के सर्वेक्षण अनुसंधान एवं डाटा विश्लेषिकी विभाग द्वारा 12 जनवरी, 2026 को पुस्तकालय भवन की तृतीय मंजिल पर "भारत में देर से होने वाली भ्रूणीय एवं नवजात मृत्यु की वस्तुस्थिति एवं प्रवृत्तियाँ" विषय पर शैक्षणिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जनांकिकी एवं जनसंख्या स्वास्थ्य के क्षेत्र के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ प्रो. मिशेल गियो द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट अतिथियों, संकाय सदस्यों एवं शोधार्थियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन समारोह के साथ हुआ। इसके उपरांत निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार) प्रो. देवराम अ. नागदेवे ने प्रो. मिशेल गियो तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया।

इसके उपरांत प्रो. लक्ष्मी कांत द्विवेदी ने उद्‌घाटन वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए जनसंख्या अध्ययन एवं जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के साथ शैक्षणिक संवाद के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके उपरांत प्रो. शिवा एस. हल्ली ने परिचयात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा प्रो. मिशेल गियो का परिचय देते हुए जनांकिकीय विधियों, मृत्यु संबंधी अनुसंधान एवं वैश्विक जनसंख्या स्वास्थ्य अध्ययनों के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान को रेखांकित किया।

कार्यक्रम के मुख्य सत्र का शुभारंभ प्रो. मिशेल गियो द्वारा "भारत में देर से होने वाली भ्रूण एवं नवजात मृत्यु की गतिशीलता" विषय पर दिए गए व्याख्यान से हुआ। लगभग 45 मिनट की अवधि के अपने व्याख्यान में उन्होंने भारत में मृतजन्म एवं नवजात मृत्यु से संबंधित महत्त्वपूर्ण विषयों, इन संकेतकों के मापन में आने वाली चुनौतियों, वर्तमान डाटा प्रणालियों में विद्यमान कमियों तथा बेहतर समझ एवं नीतिगत निर्माण के लिए भावी निगरानी डाटा की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि भारत में विभिन्न निगरानी स्थलों पर डाटा संकलन के लिए किए जा रहे नए प्रयास मृत्यु प्रतिरूपों की बेहतर समझ विकसित करने में सहायक हो सकते हैं तथा जनस्वास्थ्य संबंधी बेहतर उपायों के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान के रोजगार सहायता कक्ष एवं आईआईपीएसएए द्वारा 14 फरवरी 2026 को गांधी फेलोशिप कार्यक्रम एवं पिरामल फाउंडेशन के सहयोग से "21वीं सदी में सामाजिक प्रभाव आधारित करियर निर्माण" विषयक सत्र का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस) के रोजगार सहायता कक्ष एवं आईआईपीएसएए द्वारा 14 फरवरी 2026 को गांधी फेलोशिप कार्यक्रम एवं पिरामल फाउंडेशन के सहयोग से "21वीं सदी में सामाजिक प्रभाव आधारित करियर निर्माण" विषयक सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का समन्वयन प्रोफेसर अभिषेक सिंह एवं प्रोफेसर नंदिता शइकीया द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने सामाजिक प्रभाव आधारित करियर के विभिन्न आयामों पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। साथ ही, "स्किल चैलेंज" गतिविधि के माध्यम से छात्रों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई, जिससे उन्हें सामाजिक क्षेत्र में करियर से संबंधित कौशल एवं अवसरों की बेहतर समझ प्राप्त हुई।

निबंध सामग्री

नाम – योगेश खेर्डेकर
पदनाम – अनुभाग अधिकारी
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान

उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम

एक पुरानी कहावत है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होता है, उसका मन भी स्वस्थ रहता है। व्यायाम मूल रूप से कोई भी शारीरिक गतिविधि है जिसे हम अपने शरीर को आराम देने और सभी मानसिक तनाव को दूर करने के लिए करते हैं। स्वस्थ रहने के लिए नियमित व्यायाम करना अत्यंत आवश्यक है। व्यायाम कई प्रकार के होते हैं, जैसे प्राणायाम, दौड़ना, साइकिल चलाना, रस्सी कूदना, खेलना आदि। जब हम इसे रोजाना करते हैं तो हम शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से स्वस्थ हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, रोजाना व्यायाम न करने से व्यक्ति विभिन्न बीमारियों के प्रति संवेदनशील हो सकता है।

मनुष्य के जीवन में व्यायाम का महत्व कितना है, ऐसा लगता है कि यह बात शायद हम में से अधिकतर लोग भूल गए हैं। इस व्यस्त दुनिया में इंसान के पास न तो अपने लिए समय है और दूसरों के लिए तो भूल ही जाइए। स्कूल जाने वाले बच्चों को जहाँ जितनी पढ़ाई के महत्व के बारे में ज्यादा बताया जाता है, उन्हें उतना अपनी सेहत के बारे में कम बताया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से यह देखा गया है छोटे-छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल, टेबलेट हैं। जहाँ इन बच्चों को पार्क में जाकर खेलना, व्यायाम करना चाहिए, वह अपने स्मार्टफोन में व्यस्त हैं। युवा और बड़ों का भी ऐसा ही हाल है। हमें अपनी लाइफस्टाइल को बदलना ही होगा। व्यायाम का महत्व ऐसे में सबको समझना चाहिए व्यायाम करने के कई फायदे हैं। यह किसी प्रकार के रोग को पास नहीं आने देता, तन और मन को मजबूत करता है, शरीर को फुर्तीला बनाता है, व्यायाम से अपने कर्तव्यों के निर्वहन में कोई बाधा नहीं आती और शरीर कभी नहीं थकता। शरीर हमेशा चुस्त और दरुस्त रहता है। हमेशा मैदान में या फिर खुली हवा में व्यायाम करना चाहिए। सभी को अपना दिमाग व्यायाम में ी हो रही है तो नियमित शारीरिक गतिविधि हमें जल्दी लगाना चाहिए। भोजन के बाद व्यायाम नहीं करना चाहिए और व्यायाम के तुरंत बाद भोजन नहीं करना चाहिए। व्यायाम के लिए संयम की आवश्यकता होती है।व्यायाम को हम आसान शब्दों में समझें तो यह अनिवार्य रूप से कोई भी दोहराई जाने वाली शारीरिक गतिविधि है। जो हमारे शरीर को आराम देने और मानसिक तनाव को कम करने में मदद करती है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम की महत्वपूर्ण भूमिका है। नियमित व्यायाम के बिना व्यक्ति आसानी से बीमार हो सकता है। अपने दैनिक जीवन में व्यायाम शामिल करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अतः रोजाना खाना खाने की तरह ही हमें रोजाना व्यायाम भी करना चाहिए। व्यायाम से शारीरिक स्वस्थता और मानसिक सतर्कता प्राप्त की जा सकती है। शारीरिक गतिविधि हमें अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने और बीमारियों से दूर रहने में मदद कर सकती है। शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण कई बीमारियाँ होती हैं, जैसे हृदय की समस्याएँ, उच्च रक्तचाप, उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल और टाइप 2 मधुमेह। हमें अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न प्रकार के योग और शारीरिक व्यायाम करने चाहिए। व्यायाम की सहायता से हम लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। अगर किसी कारणवश हमें नींद आने में परेशान सोने, बेहतर नींद लेने और गहरी नींद लेने में मदद कर सकती है। बस सोने के समय से बहुत पहले व्यायाम नहीं करना चाहिए, नहीं तो हम सोने के लिए बहुत ज़्यादा ऊर्जावान हो सकते हैं।

व्यक्ति का अच्छा स्वास्थ्य एक खजाने की तरह है और व्यायाम इसकी कुंजी है। योग और अन्य व्यायामों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को बनाए रखने में मदद मिल सकती है, जिससे तनाव का स्तर कम हो सकता है। सरल शब्दों में स्वस्थ और फिट रहने का मतलब शरीर की

अच्छी देखभाल करना है। हमें याद रखना चाहिए कि स्वस्थ शरीर ही असली धन है। मन और शरीर दोनों का अच्छा स्वास्थ्य जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक सकारात्मक ऊर्जा स्तर को बनाए रखने में मदद करता है। हम सभी को संपूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।अपने शरीर को हानिकारक पदार्थों के सेवन से बचाना, नियमित व्यायाम करना, उचित भोजन और नींद लेना कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जो एक स्वस्थ जीवन शैली को परिभाषित करते हैं। एक स्वस्थ और तंदुरुस्त व्यक्ति बिना किसी बड़ी चिकित्सीय या शारीरिक समस्या के पूर्ण जीवन जीने में सक्षम है। स्वस्थ रहना न केवल किसी व्यक्ति की शारीरिक भलाई से संबंधित है, बल्कि इसमें व्यक्ति की मानसिक स्थिरता या आंतरिक शांति भी शामिल है। आम तौर पर, एक स्वस्थ आहार में उचित और स्वस्थ भोजन लेना शामिल होता है जिसमें हरी और ताजी सब्जियां, फल खाना, दूध, अंडे, खनिज, प्रोटीन और मानव की जीवनशैली के लिए आवश्यक विटामिन शामिल होते हैं। अपनी दिनचर्या में नियमित व्यायाम सहित योग का अभ्यास करने से आपको वांछित फिटनेस, रक्त शर्करा और प्रतिरक्षा स्तर को बनाए रखने में भी मदद मिलती है। जिम सेशन या तेज चलने से तनावपूर्ण दिन के बाद तनाव को कम करने में मदद मिलती है साथ ही भावनात्मक उत्थान में भी मदद मिलती है । शारीरिक गतिविधि कई मस्तिष्क रसायनों को उत्तेजित करती है जो हमें अधिक खुश, अधिक आराम और कम चिंता महसूस करा सकती है। जब हम नियमित रूप से व्यायाम करते हैं तो हम अपने स्वरूप और अपने बारे में बेहतर महसूस कर सकते हैं, जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ेगा और आत्म-सम्मान में सुधार होगा।

स्वस्थ आदतें हमारी शारीरिक उपस्थिति, मानसिक स्थिरता, गतिविधियों को बेहतर तरीके से करने की क्षमता में सुधार करती हैं, जो हमें तनाव मुक्त जीवन शैली जीने, खुश मूड बनाए रखने, उच्च ऊर्जा स्तर आदि में मदद करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर लेना चाहिए; शारीरिक और मानसिक फिटनेस बनाए रखने के प्रयासों के लिए एक भी दिन नहीं छोड़ना चाहिए। खुश रहना सीधे तौर पर आपकी मानसिक शक्ति और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने से संबंधित है, इसलिए खुशी को परिणाम के साथ-साथ स्वस्थ और फिट जीवनशैली का हिस्सा भी माना जा सकता है। शारीरिक फिटनेस बनाए रखने में व्यायाम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वजन कम करने या बढ़ाने में सहायता करने में भी यह असरदार है। पाचन को नियंत्रित करने और मजबूत हड्डियों को सुनिश्चित करने के लिए व्यायाम महत्वपूर्ण है। व्यायाम करने के कई तरीके हैं, जैसे माध्यम एरोबिक व्यायाम के अंतर्गत आता है तेज़ी से चलना, पनि के एरोबीक्स, नृत्य, युगल टेनिस, लॉन घास काटने की मशीन को धक्का देना, लंबी पैदल यात्रा करना, रोलर्ब्लेडिंग करना, साइकिल चलाना, तैरना और आउटडोर गेम खेलना आदि। उसी तरह तीव्र गतिविधि व्यायाम भी हैं जिसके अंतर्गत आता है तैराकी, दौड़ना, तेजी से पहाड़ों पर बाइक चलाना, सिढ्ढियों से ऊपर चलना, फूटबोल रग्बी, नेटबॉल, हॉकी खेलना, रस्सी कूदना, कसरत, मार्शल आर्ट आदि। बहुत जोरदार गतिविधि वाले व्यायाम के अंतर्गत भारी वजन उठाना, पहाड़ियों पर तेजी से चलना, सीढ़ियों से ऊपर दौड़ना आदि। इन सभी व्यायाम को अपने जीवन में शामिल करके, हम अपने शरीर को स्वस्थ और अपने दिमाग को तेज रख सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हर दिन थोड़ी-बहुत मेहनत अच्छे स्वास्थ्य की दिशा में एक लंबा रास्ता तय करती हैं।

मानव शरीर कई छोटे-छोटे भागों वाली एक जटिल मशीन की तरह होता है। अगर हमारे शरीर का एक भी भाग खराब हो जाए, तो यह पूरे शरीर को प्रभावित कर सकता है। व्यायाम हमारे शरीर के कामकाज को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यायाम करना एक स्वस्थ आदत है जो हमारे स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाती है। नियमित व्यायाम हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर सकता है। यह हमें अच्छा महसूस करने में भी मदद करता है, जिससे हमारा पूरा स्वास्थ्य बेहतर होता है। व्यायाम केवल शारीरिक के साथ हमारे भावनात्मक संतुलन और आत्म-सम्मान के लिए भी महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, व्यायाम और भी जरूरी हो जाता है क्योंकि समय के साथ हमारे दिल की कार्यक्षमता कम होती जाती है। बच्चों के लिए व्यायाम उनके विकास और वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण होता है। नियमित व्यायाम से हमारा पाचन तंत्र मजबूत होता है। व्यायाम हमारे शरीर को स्वस्थ और मजबूत रखते हुए ख़ाली समय बिताने का एक मज़ेदार और फ़ायदेमंद तरीका है। व्यायाम सक्रिय रूप से करने से मांसपेशियां मजबूत रहती हैं और जोड़, टेंडन और लिगामेंट्स लचीले रहते हैं, जिससे हम अधिक आसानी से चल सकते हैं और चोट से बच सकते हैं। मजबूत मांसपेशियाँ और स्नायुबंधन जोड़ों को उचित संरेखण में रखकर जोड़ों और पीठ के निचले हिस्से में दर्द के जोखिम को कम करते हैं। वे समन्वय और संतुलन में भी सुधार करते हैं। आप जितना अधिक व्यायाम करेंगे, उतनी अधिक कैलोरी बर्न करेंगे। इसके अलावा, आप जितनी अधिक मांसपेशियाँ विकसित करते हैं, आपकी चयापचय दर उतनी ही अधिक हो जाती है, इसलिए जब आप व्यायाम नहीं कर रहे होते हैं तब भी आप अधिक कैलोरी जलाते हैं। व्यायाम का महत्व (Importance of Exercise in Hindi) इस बात से परिणित है कि आप अपना वजन कम कर सकते हैं और शारीरिक रूप से बेहतर दिख सकते हैं जिससे आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा।

व्यायाम की महत्ता को समझते हुए यह कहना उचित होगा कि उचित स्वास्थ्य और फिटनेस के लिए व्यायाम करना अति आवश्यक है। इसके अलावा, यह जीवन के सभी क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है। खासतौर पर आज के युवाओं को पहले से कहीं ज्यादा व्यायाम करने की जरूरत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे प्रतिदिन जो जंक फूड खाते हैं, वह उनके जीवन की गुणवत्ता में बाधा डाल

सकता है। इसलिए हमारे जीवन में व्यायाम का महत्व (Importance of Exercise in Hindi) और बढ़ जाता है। यदि हम स्वस्थ नहीं हैं तो हम सुखी जीवन नहीं जी सकते और समाज के विस्तार में अपना योगदान नहीं दे पाएंगे। इस प्रकार, इन सभी समस्याओं को दूर करने के लिए व्यायाम करने की आवश्यकता है। लेकिन, यह सिर्फ युवाओं के बारे में नहीं बल्कि समाज के प्रत्येक सदस्य के बारे में है। आजकल, कॉलेजों में शारीरिक गतिविधियाँ अक्सर होने लगती हैं। शारीरिक व्यायाम के आयोजन के लिए पेशेवरों को परिसर में बुलाया जाता है। इस प्रकार, यह उन सभी के लिए एक महान अवसर है जो इसे करना चाहते हैं। जिस तरह कॉलेज के बच्चों के लिए व्यायाम आवश्यक है, उसी तरह कार्यालय में काम करने वालों के लिए भी यह अत्यंत आवश्यक है। डेस्क जॉब के लिए व्यक्ति को बिना ब्रेक के लंबे समय तक डेस्क पर बैठना पड़ता है। यह बहुत ही अस्वास्थ्यकर जीवनशैली को जन्म देता है। यही कारण है कि आजकल स्कूल कॉलेजों के साथ-साथ कार्यस्थलों पर भी व्यायाम का महत्व (Importance of Exercise in Hindi) बताया जाता है, क्योंकि उन्हें सीमित मात्रा में व्यायाम मिलता है एवं वे सारा दिन बस बैठे रहते हैं और फिर घर वापस आकर सो जाते हैं। इसलिए, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए व्यायाम करना आवश्यक है जिससे किसी भी हानिकारक बीमारी से भी बचा जा सकता है। व्यायाम हमारे ऊतकों तक ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचाता है तथा हमारे हृदय प्रणाली को अधिक कुशलता से काम करने में मदद करता है। और जब हमारे हृदय और फेफड़ों का स्वास्थ्य बेहतर होता है, तो हमारे पास दैनिक कामों को निपटाने के लिए अधिक ऊर्जा होती है।

ये कुछ परिस्थितियाँ हैं जिनमें व्यायाम नहीं करना चाहिए: पेट भरा होने के वक्त जब आपका पेट भरा हो तो व्यायाम नहीं करनी चाहिए। , सोने से ठीक पहले व्यायाम करने से वात बढ़ता है। , भूख के वक्त, आधी क्षमता तक ही करें व्यायाम नियमित व्यायाम हमारी फिटनेस और सहनशक्ति को बढ़ाता है। यह हृदय संबंधी समस्याओं, मधुमेह और मोटापे को रोकने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह रक्तचाप को भी कम करता है और हृदय रोग, स्ट्रोक और कैंसर के जोखिम को कम करता है। व्यायाम करने से सभी उम्र के लोगों को लाभ होता है। व्यायाम शरीर और दिमाग दोनों के लिए बहुत अच्छा है। यह व्यक्ति के तनाव और चिंता को दूर करने में मदद करता है। जिससे हम एक लंबे तनाव भरे दिन के बाद खुश और अधिक आराम महसूस करते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि नियमित व्यायाम डिप्रेशन में भी मदद कर सकता है। जो लोग नियमित रूप से व्यायाम करते हैं वे आसानी से बीमार नहीं होते हैं। व्यायाम के बिना हमारी मांसपेशियाँ कमज़ोर हो जाती हैं, और हमारा शरीर ठीक से काम नहीं करता है। सक्रिय रहने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, जिससे बीमारियों का जोखिम कम होता जाता है। यही कारण है कि व्यायाम हमारे जीवन में इतना महत्वपूर्ण है – यह हमें स्वस्थ और खुश रखता है। वर्तमान दुनिया में व्यायाम के ा सोच और अच्छा स्वास्थ्य दोनों ही ईश्वर का वरदान हैं।

कई लाभ हैं। यह व्यक्ति के शरीर में कैलोरी जलाकर वजन को नियंत्रित करने में मदद करता है। जिन लोगों का अधिक वजन होता है उन्हे यह वजन घटाने में सहायता करता है।

व्यायाम शरीर की मांसपेशियों को मजबूत करता है और अधिक कैलोरी जलाने के लिए मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है। यह शरीर में ऑक्सीजन के स्तर और रक्त परिसंचरण को भी बढ़ाता है। व्यायाम हमारी एकाग्रता को बढ़ाता है। इससे अल्जाइमर जैसी बीमारी होने की संभावना भी कम होती है। व्यायाम हमारे हृदय पर तनाव को कम करता है। यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है। इस कारण से मधुमेह को रोकने और कम करने में मदद मिलती है। आज के व्यस्त समय में हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित रुप से व्यायाम करना महत्वपूर्ण है। व्यायाम लोगों को स्वस्थ वजन बनाए रखने और कुछ बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद करता है। नियमित रूप से व्यायाम करने से वजन बढ़नेमधुमेह, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप को रोकने में मदद मिल सकती है। हड्डियों को मजबूत बनाने वाले व्यायाम – जैसे कूदना, दौड़ना या वजन उठाना – हड्डियों को मजबूत रखने में मदद कर सकते हैं।

एक सामान्य लक्ष्य के रूप में, हर दिन कम से कम 30 मिनट की मध्यम शारीरिक गतिविधि का लक्ष्य रखना चाहिए। यदि हम अपना वजन कम करना चाहते हैं, खोए हुए वजन को बनाए रखना चाहते हैं या विशिष्ट फिटनेस लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें अधिक व्यायाम करने की आवश्यकता हो सकती है। हमारे बैठने के समय को कम करना भी महत्वपूर्ण है। व्यायाम चिंता, डिप्रेशन और नकारात्मक सोच को कम करके और स्वयं के प्रति आत्म-सम्मान में सुधार करके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करता है। व्यायाम करने से शरीर द्वारा उत्पन्न होने वाले सुखद हार्मोन्स बढ़ते हैं, जिनसे तनाव कम होता है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होती है।

हमारे वर्कआउट में कार्डियो, वेट ट्रेनिंग, पुश-अप्स, पिलेट्स, योगा आदि जैसे व्यायामों का संयोजन होना चाहिए। साथ ही, हमें खुद को प्रेरित रखने के लिए हर 3 दिन या एक सप्ताह में अपने दैनिक व्यायाम को बदलते रहना चाहिए। हर दिन एक ही व्यायाम करने से हम वर्कआउट करने से उत्साह की भावना को खो सकते हैं। हमें स्वस्थ जीवन जीने के लिए मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए व्यायाम करना बहुत ज़रूरी है। व्यायाम हमारे शरीर के पूरे विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे जीवन में हमें काम, आराम और गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखना बहुत ज़रूरी है, इसलिए स्वस्थ रहने के लिए हर दिन व्यायाम करने के लिए समय निर्धारित करना चाहिए और इस पर अमल करना चाहिए। व्यायाम को किसी भी उम्र में किया जा सकता है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को नियमित व्यायाम करना चाहिए और प्रतिदिन सुबह जल्दी उठना चाहिए इससे स्वस्थ शरीर का निर्माण होता है साथ ही समृद्धि

नाम – रामखेलावन आर. यादव
पदनाम – प्रवर श्रेणी लिपिक
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान

जनसंख्या शिक्षा

परिचय

जनसंख्या की तेजी से बढ़ती वृद्धि एक वैश्विक समस्या है जो मानव जीवन, स्वास्थ्य, समृद्धि और विश्व शांति को प्रभावित करती है। इस समस्या के समाधान के लिए छात्रों को प्रारंभिक स्तर से ही जनसंख्या और इसके प्रभावों के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता है।

जनसंख्या शिक्षा का अर्थ

जनसंख्या शिक्षा वह शिक्षा है जिसके द्वारा छात्रों को जनसंख्या वृद्धि और जीवन-स्तर के संम्बंधों की जानकारी दी जाती है। उसके द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों को जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूकता बनाया जाता है। उसे उचित समय पर उचित निर्णय लेने के योग्य बनाया जाता है। जनसंख्या शिक्षा के द्वारा ऐसी भावना या विचारधारा बालक में उत्पन्न की जाती है जिससे वह उन्नत जीवन स्तर को समझे और आपको अपनाए। जनसंख्या शिक्षा के द्वारा जनसंख्या वृद्धि व जीवन की गुणवता के पारस्परिक संबंधों का बोध करवाया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा द्वारा छात्रों में जनसंख्या के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, चेतना, उत्तरदायित्व, अभिवृत्ति एवं व्यवहारों का विकास होता है। जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है। इसमें जनसंख्या वृद्धि की गति, संसार में जनसंख्या वृद्धि, विभिन्न देशों के साथ भारत की जनसंक्या संबंधी तुलना, भौतिक साधन व जनसंख्या संतुलन आदि का बोध बालकों को कराया जाता है।

विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाया जाता है। जनसंख्या शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रो. वैलेंड ने 1962 के पश्चात् किया।

सितम्बर 1970 ने यूनेस्को की ओर से बैंकाक में आयोजित की गई जनसंख्या शिक्षा संगोष्ठी द्वारा बताया गया कि –
"जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में इस स्थिति के प्रति विवेकपूर्ण, उत्तरदायित्वपूर्ण दृष्टिकोण व व्यवहार का विकास हो।"

वीडरमैन के अनुसार – "जनसंख्या शिक्षा की परिभाषा उस प्रक्रिया की भांति की जा सकती है जिससे छात्र जनसंख्या प्रक्रियाओं, जनसंख्या की विशेषताएँ , जनसंख्या में परिवर्तन के कारणों एवं इसके परिणामों की जो स्वयं के लिए, उसके समाज तथा संपूर्ण समाज के लिए घटित होते हैं, के संबंध में शोध तथा खोज करते हैं।''

डॉ. वी.के.आर.वी. राव के शब्दों में – जनसंख्या शिक्षा परिवार के आकार के संबंध में सही अभिवृत्ति विकसित करने के लिए प्रेरणाशाक्ति प्रदान करती है।

जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य

श्री हंसराज भाटिया ने 1969 में जनसंख्या शिक्षा के 6 प्रमुख उद्देश्य बताएं थे—

1. विश्व जनसंख्या के संदर्भ में देश की जनसंख्या वृद्धि दर, जनसांख्यिकी रूपरेखा सहित जनसंख्या गतिविधि का बुनियादी ज्ञान छात्रों को प्रदान करना।

2. आर्थिक विकास तथा उच्च् स्तर का स्वास्थ्य, शिक्षा , घर, भोजन तथा जीवन की अन्य सुविधाओं के साथ व भावी जीवन स्तर की प्राप्ति के लिए जनसांख्यिकी वर्तमान विशेषताओं के महत्व को मूल्यांकित करने की योग्यता प्रदान करना।

3. छात्रों को इस तथ्य से पिरिचित कराना कि परिवार के हित के लिए परिवार का आकार आसानी से नियोजन हो सकता है। साथ ही आज के युग के लिए परिवार का बड़ा होना आवश्यक नहीं है।
4. छात्रों को माता व सन्तान को स्वास्थ्य के जोखिम का ज्ञान कराना।
5. छात्रों को बताना कि छोटे परिवार में ही हर सदस्य को उच्च् जीवन स्तर प्राप्त करने की संभावना रहती है।
6. राष्ट्रहित के लिए सरकारी परिवार नियोजन योजना का ज्ञान कराना।

जनसंख्या शिक्षा का क्षेत्र

जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित तथ्य शामिल किए जाते हैं –

1. जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. जनसंख्या के गणनात्मक अध्ययन करना।
3. जनसंख्या के विभिन्न तत्वों व उसकी परस्पर संबद्धता एवं संबद्धता के मानव जीवन पर प्रभावों का अध्ययन करना।
4. जनसंख्या के गुणात्मक व संख्यात्मक विकास का पता लगाना।
5. जनसंख्या से संबंधित शैक्षिक कार्यक्रम विभक्त करना।
6. जनसाधारण को जनसंख्या नियंत्रण करने उपाय बताना व सीमा से अधिक जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों से अवगत कराना।
7. जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए शैक्षिक तथा निदानात्मक उपाय काम में लाना।
8. जनसंख्या से संबंधित निर्धारित तत्वों का पता लगाना।

जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति आधुनिक समय के संदर्भ में जनसंख्या शिक्षा के महत्व और आवश्यता की उपेक्षा नहीं कर सकता।

आज जनसंख्या शिक्षा के द्वारा इस बात पर बल दिया जा रहा है कि विद्यार्थी समाज तीव्रगति से बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न दुष्परिणामों से अवगत हो। उसके कारणों की खोज करें उसका चिंतन करके जनसंख्या वृद्धि रोको के नारे के साथ एक जन आन्दोलन खड़ा करें जिससे सबकों ध्यान इस ज्वलन्त समस्या की ओर आकृष्ट हो सके एवं सभी जन आन्दोलन में शामिल होकर इस समस्या के खिलाफ संघर्ष कर सकें।

जनसंख्या शिक्षा छात्रों को जनसंख्या संबंधी समस्याओं की प्रकृति को समझने में सहायता प्रदान करती है। जैसे—जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से समझाया जा सकता है कि अन्न उत्पादन व जनसंख्या वृद्धि में क्या संबंध है।

इसी प्रकार 1951-52 में 3.5 करोड़ आबादी बेरोजगार थी। सन 1965 के अन्त में 31 कोरड़ रोजगार की व्यवस्था भारत ने की। फिर भी उस समय 10 करोड़ आदमी बेरोजगार रह गए। इस प्रकार आबादी से संबंधित और भी समस्याएं हैं, जैसे—जल एवं हवा की पवित्रता, गंदी एवं अविकसित बस्तियों की वृद्धि, बसों जनपथों, जन-स्थानों पर भीषण भीड़ आदि।

जनसंख्या शिक्षा के द्वारा परिवार नियोजन को पारिवारिक जीवन में सहजतापूर्वक लाया जा सकता है तथा आबादी की बाढ़ पर बाँध खड़ा कर उसके जन कल्याणकारी बनाया जा सकता है। हम जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता व महत्व को निम्नानुसार व्यक्त कर सकते हैं –

1. छोटा परिवार सदैव सुखी होता है। यह बाद जनसंख्या शिक्षा द्वारा छात्रों के मन में बैठ जाएं तो अपने आप परिवार नियोजन करेंगे।
2. जनसंख्या शिक्षा आज राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। इस कारण जनसंख्या शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है।
3. जनसंख्या शिक्षा से छात्रों में अच्छी नागरिकता व राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सकता है।
4. जनसंख्या शिक्षा परिवार नियोजन से संबंधित कार्यक्रम नहीं है। यह कोई प्रचार -प्रसार का कार्यक्रम नहीं है. किंतु विद्यालयी पाठ्यक्रम का अंग है जिसके विशद अध्ययन से छात्रों में समस्या की समझ विकसित होती है एवं छात्र कालान्तर में इस समस्या के समाधान के लिए अपने मौलिक उपाय खोज सकते हैं।

जनसंख्या शिक्षा के स्वरूप की अस्पष्टता

1. पाठ्यक्रम के निर्माण की समस्या
2. प्रशिक्षित व समर्पित अध्यापकों का अभाव
3. अस्पष्ट उद्देश्य
4. अल्पसंख्यकों का असहयोग
5. सामाजिक कुरीतियां
6. शिक्षण विधियों का अभाव
7. पाठ्यपुस्तकों का अभाव
8. अभिभावकों का असहयोग
9. अन्धविश्वास
10. रोजगार से न जुड़ पाना

राजस्थान राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर ने जनसंख्या शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक अलग ही आयोग गठित किया है जो कि निम्नलिखित कार्य कर रहा है –

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की रचना – संस्थान विषयानुसार कक्षा 3 से 8 तक के स्तर की अनेक पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है।

प्रशिक्षण—संस्थान की तरफ से सेवारत व सेवापूर्व प्रशिक्षण देने हेतु पाठ्यक्रम तैयार किया जा चुका है एवं प्रशिक्षण प्रारम्भ हो चुका है, लेकिन प्रशिक्षक की गति धीमी है। इस गंभीरता को देखते हुए इसे अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

शिक्षा -प्रसार – देश में निरक्षरता को दूर करने के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षाकर्मी योजनाओं के द्वारा साक्षरता का प्रसार किया जा रहा है। इससे अन्धविश्वास, कुरीतियां आदि दूर हो सकेंगी। राज्य सरकार द्वारा शिक्षा को अधिक बढ़ावा देकर निरक्षरता को पूर्णतया तय सीमा में समाप्त करना होगी.

जनसंख्या शिक्षा में अध्यापक की भूमिका

भारत में जनसंख्या की वृद्धि तीव्र गति पर है जिसे रोकने का एकमात्र उपाय है शिक्षा। जब भावी नागरिक शिक्षित होंगे, जनसंख्या से पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में समझ रखते होंगे, तब वे स्वयं ही जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए आगे खड़े होंगे। आज भी हम देख रहे हैं कि जितने शिक्षित युवा हैं, उनके परिवारों में एक या

दो बच्चे हैं। यह चमत्कार शिक्षा के कारण ही हुआ है। और यह शिक्षा किसी और ने नहीं अध्यापक ने ही प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से दी है। डॉ. कोठारी के मतानुसार—भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा हैं। शिक्षक बालकों के मानसिक बोध को देश की जनसंख्या नीति निर्धारण में, उसके पालन में सक्रिय योगदान देने के योग्य बनावें।

1. अनुसंधान एवं शोधकार्य – शिक्षक को जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं पर शोध एवं अनुसंधान कार्य करना चहिए ताकि भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई जा सके।
2. स्वाध्याय—शिक्षक जनसंख्या से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करें एवं प्राप्त ज्ञान के माध्यम से छात्रों को संबंधित विषय का ज्ञान रुचिपूर्ण तरीके से सफलतापूर्वक कराएं।
3. सहायक सामग्री निर्माण – शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न अधिकरों के माध्यम से सहायक सामग्री का निर्माण करने का प्रयास करें।
4. शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के विवादपद विंदुओं से स्वयं को अलग रखें। कभी भी अनावश्यक विवाद में न पड़े।
5. शिक्षक बालकों को जन्म व मृत्युदर की जानकारी देते हुए जनसंख्या की समस्या के बारे में अवगत कराएं।
6. शिक्षक वर्तमान समय की विभिन्न समस्यों जैसे—बेरोजगारी, हर जगह भीड़-भाड़, महामारियां, अकाल , दुर्घटनाएं आदि जनसंख्या वृद्धि से जोड़कर छात्रों को बढ़ती जनसंख्या से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में समझाएं।
7. शिक्षक अपने विद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों जैसे- वाद-विवाद, निबंध लेखन, कविता पाठ, चित्र पदर्शन, समाचार-पत्र वाचन की जनसंख्या शिक्षा से जोड़े अर्थात् उपर्युक्त कार्यक्रम को जनशिक्षण में उपयोग में लाएं। देश की आजादी के समय संपूर्ण भारत की जनसंख्या मात्र 35 करोड़ थी एवं दुर्घटनाएं नाममात्र की भी नहीं थीं। आधुनिक तकनीकी का अभाव था, फिर भी लोग दुखी थे। आज के समान कद-कदम पर कठिनाइयां नहीं थीं।

निष्कर्ष:
शिक्षा ही जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी उपाय है। शिक्षित युवा परिवार नियोजन अपनाते हैं और समाज में जनसंख्या संतुलन बनाए रखते हैं।

काव्य संग्रह

नाम – अंशु प्रिया

कक्षा – एमए. एमएससी. द्वितीय वर्ष
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान मुंबई

सपनो का शहर मुंबई

ये है सपनों का शहर,
जागता रहता हर पहर।
चारों ओर बस एक शोर,
संघर्ष और उम्मीदों की होड़।

बड़ी-बड़ी रौशनियों की चमक के बीच,
हर दिल में चलती एक अनकही जंग।
नींद कम, सेहत भी तंग,
भीड़ भरी दुनिया में कई बार कोई अपने संग नहीं।
हर चेहरा थोड़ा थका हुआ है,
पर अपने ख़्वाबों के लिए जगा हुआ है।

खुद से ज़्यादा बप्पा या अल्लाह पर भरोसा करके,
हर कोई आगे बढ़ता हुआ है।
सपनों का शहर है ये,
और लोग भी सपनों जैसे।
जो कभी थकते नहीं,
कभी रुकते नहीं।

बेखौफ़ जीते हैं,
हर पल पूरे शौक से जीते हैं।
मुंबई की बारिश में भी
भीगते सब हैं,
पर रुकता कोई नहीं।

ज़िंदगी में बस एक ठहराव तब आता है,
जब कहीं दिख जाए वड़ा पाव।
थकान दूर तब होती है,
जब सुबह सिद्धिविनायक
और शाम मरीन ड्राइव पर बीतती है।

ये सपनों का शहर है जनाब,
जहाँ लोग हारकर भी
फिर से जीतने का हौसला रखते हैं।

नाम – योगेश खेर्डेकर

पदनाम – अनुभाग अधिकारी
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान

जनसंख्या पर नियंत्रण एक बेहतर जीवन का चयन

नाम – निहारिका अवस्थी

कक्षा – पीएच.डी.
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान

टूटता तारा

आफ़तों के आसमान में
जब गलती से कोई टूटता तारा दिखता है
तो उससे क्या ख़्वाहिश मांगी जाए
कितना कुछ है मांगने को
इस फैसले पर आते-आते अक्सर वो तारा गायब हो जाता है
और हम रह जाते हैं बिना कुछ मांगे

पर वो तारा कहीं तो गिरता होगा
उसे पता तो चल ही गया होगा मैंने उसके बारे में सोचा था
वो समझ तो गया होगा कि वो मेरे लिए टूटा
इसी सवाल को उलझाते सुलझाते
आफ़तों के आसमान के नीचे मेरी एक और शाम गुजर गई

ये हर शाम होता आ रहा है
जब भी मैंने मेरे आफ़तों के आसमान में
बेचैनी के काले बादलों के बीच
किसी चमकते तारे को टूटते देखा है
और हर बार मैं कुछ मांग ही नहीं पाई

एक शाम मैंने सोचा
आज भी भले मांग न सकूँ
पर अगर कोई तारा टूटा तो मैं उसका पीछा करूंगी

और उससे पूछूंगी कि क्या उसे अंदाजा भी है
मैंने कितनी शामें सोची है उसके बारे में
बस ये जाने के लिए कि क्या टूटते तारे को फर्क पड़ता है
कि वो किसके गर्दिशों के आसमां से गुजरा

चढ़ गई मैं फिर उस शाम छत पर
और गौर से देखने लगी आफ़तों के आसमान की तरफ
मेरी बदकिस्मती के विपरीत आज एक तारा टूटा
और मैं भागी उसके पीछे
शहर से दूर
नदी, नालों, जंगलों को पार करती हुई
दुनियाँ के आखिरी छोर तक

अब मैं एक निचाट रेगिस्तान में खड़ी हूँ
मेरे सामने गिरा एक टूटता तारा
और तुम बन गया

अब मुझे नहीं लगता मेरे पास कोई सवाल बचा है
आफ़तों का आसमान अब भी है
पर कम से कम अब मुझे य़कीन है
कि ख़्वाहिश पूरी होने के लिए
ख़्वाहिश करना जरूरी नहीं होता

उपलब्धि

आईआईपीएस की पीएच.डी. शोधार्थी आयुषी दास को BSPS वार्षिक सम्मेलन 2025 में सर्वश्रेष्ठ छात्र पोस्टर पुरस्कार

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई की पीएच.डी. शोधार्थी सुश्री आयुषी दास ने 2 से 4 सितंबर 2025 तक यूनाइटेड किंगडम के स्वानसी विश्वविद्यालय में आयोजित ब्रिटिश सोसाइटी फॉर पॉपुलेशन स्टडीज़ (बीएसपीएस) वार्षिक सम्मेलन 2025 में अपने डॉक्टरेट शोध के दो महत्वपूर्ण भाग प्रस्तुत किए।

उनकी पोस्टर प्रस्तुति, "रीथिंकिंग हाइपरटेंशन कट-ऑफ्स अमंग ओल्डर इंडियन एडल्ट्स: ए मशीन लर्निंग क्लस्टरिंग अप्रोच यूज़िंग एलएएसआई बायोमार्कर डेटा", को सर्वश्रेष्ठ छात्र पोस्टर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अध्ययन में दर्शाया गया कि डेटा-आधारित पद्धतियाँ वयोवृद्ध जनसंख्या में उच्च रक्तचाप की परिभाषा को अधिक सटीक रूप से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

पोस्टर प्रस्तुति के अतिरिक्त, सुश्री दास ने अपने शोध पत्र "डिकोडिंग पब्लिक परसेप्शन्स ऑफ क्रॉनिक इलनेसिज़ थ्रू डिजिटल ट्रेस डेटा: ए क्वालिटेटिव टॉपिक मॉडलिंग एनालिसिस ऑफ यूट्यूब कमेंट्स" पर मौखिक प्रस्तुति भी दी। इस शोध में यह स्पष्ट किया गया कि लोग ऑनलाइन माध्यमों में दीर्घकालिक बीमारियों के बारे में किस प्रकार चर्चा करते हैं और उन्हें किस प्रकार समझते हैं। साथ ही, यह अध्ययन दर्शाता है कि डिजिटल डेटा पारंपरिक स्वास्थ्य सर्वेक्षणों के साथ मिलकर लोगों के वास्तविक अनुभवों को अधिक व्यापक और बेहतर ढंग से समझने में सहायक हो सकता है। सुश्री आयुषी दास की यह उपलब्धि न केवल उनके उत्कृष्ट शोध कार्य को दर्शाती है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को भी सुदृढ़ करती है। हम सुश्री आयुषी दास को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हैं तथा जनसंख्या स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान की सराहना करते हैं।

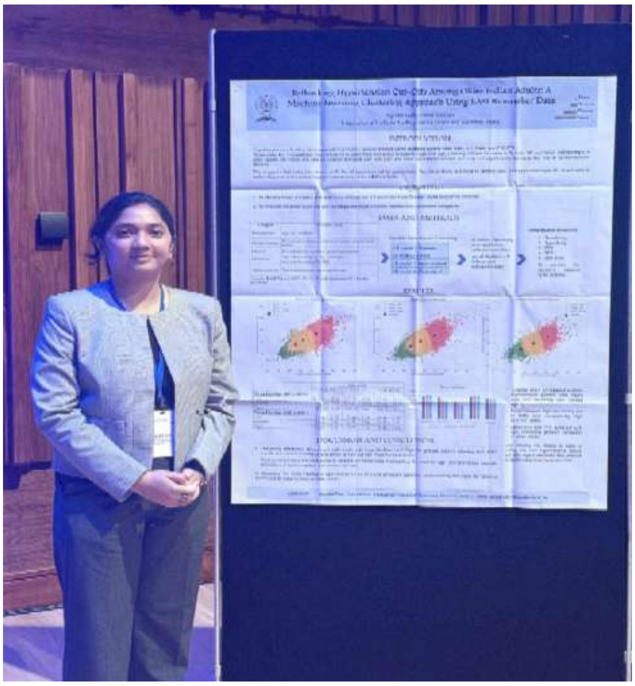

British Society for Population Studies

Ayushi Das
International Institute for Population Sciences, Mumbai, Maharashtra - 400088
By email: ayushi.das1999@gmail.com

11 September

BSPS Conference 2025
2-4 September, Swansea University

The British Society for Population Studies is pleased to confirm that Ayushi Das presented the paper ***Decoding public perceptions of chronic illnesses through digital trace data: A qualitative topic modelling analysis of YouTube comments*** at the 2025 BSPS Conference in the **Data 2 - innovative data and methods for population science** session on September 3, 2025. Ayushi also presented the paper ***Rethinking hypertension cut-offs among older Indian adults: A machine learning clustering approach using LASI biomarker data*** in the **Poster** session on September 2, 2025.

The Society is further delighted to note that Ayushi's poster won the award for the Best student poster at the conference, and was awarded a cash prize of GBP50 for this.

BSPS Secretariat
On behalf of BSPS

भारतीय संसद का भ्रमण

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति के कार्यालय से प्राप्त आमंत्रण के प्रत्युत्तर में अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई द्वारा दिनांक 19 जून 2025 को भारतीय संसद का भ्रमण आयोजित किया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को संसदीय प्रक्रिया के प्रति अधिक जागरूक बनाना तथा देश की विधायिका, जो सभी कानूनों का निर्माण करती है, के कार्यप्रणाली को निकट से समझने का अवसर प्रदान करना था। इस भ्रमण में कुल 28 (पीजी एवं पीएच.डी.) छात्रों ने भाग लिया। इनके साथ निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर (अतिरिक्त प्रभार), एक प्रोफेसर तथा सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक) भी इस भ्रमण का हिस्सा रहे।

भारत की संसद, भारत गणराज्य की सर्वोच्च विधायी संस्था है। अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ छात्रों ने अधिकारियों के साथ सभी औपचारिकताएँ पूर्ण करने के उपरांत संसद परिसर में प्रवेश किया। समूह का स्वागत सचिवालय के विभिन्न अधिकारियों द्वारा किया गया, जिन्होंने देश की विधि निर्माण प्रक्रिया के संबंध में संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। संक्षिप्त परिचय के उपरांत समूह को नए संसद भवन (लोकसभा कक्ष एवं राज्यसभा कक्ष) के निर्देशित भ्रमण के लिए ले जाया गया, जहाँ उन्होंने भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत की थीम पर निर्मित सुंदर दीर्घाओं का अवलोकन किया। इसके पश्चात छात्रों को लोकसभा कक्ष, जो मोर की थीम पर निर्मित है, तथा राज्यसभा कक्ष, जो कमल की थीम पर आधारित है, का भ्रमण कराया गया।

नए संसद भवन के दोनों सदन अत्यंत सुंदर ढंग से सुसज्जित हैं तथा आधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं। छात्रों एवं अधिकारियों को दोनों सदनों की सार्वजनिक दीर्घा में बैठने का अवसर भी प्राप्त हुआ। भ्रमण मार्गदर्शक ने अत्यंत कुशलता से संसद सत्रों के संचालन, उनकी तैयारियों तथा विभिन्न कक्षों और संरचनाओं से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण एवं रोचक तथ्यों की जानकारी प्रदान की। समूह के लिए संसद की कैंटीन में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई। इसके पश्चात छात्रों को पुराने संसद भवन (संविधान सदन) ले जाया गया, जहाँ उन्होंने संसद के केंद्रीय कक्ष का अवलोकन किया, जहाँ वर्ष 1947 में ब्रिटिश शासन से भारत को सत्ता हस्तांतरण का ऐतिहासिक क्षण घटित हुआ था। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रतीक भारतीय संसद को निकट से देखने का यह अनुभव छात्रों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक एवं स्मरणीय रहा।

पोस्टर प्रस्तुति के अतिरिक्त, सुश्री दास ने अपने शोध पत्र "डिकोडिंग पब्लिक परसेप्शन्स ऑफ क्रॉनिक इलनेसिज़ थ्रू डिजिटल ट्रेस डेटा: ए क्वालिटेटिव टॉपिक मॉडलिंग एनालिसिस ऑफ यूट्यूब कमेंट्स" पर मौखिक प्रस्तुति भी दी। इस शोध में यह स्पष्ट किया गया कि लोग ऑनलाइन माध्यमों में दीर्घकालिक बीमारियों के बारे में किस प्रकार चर्चा करते हैं और उन्हें किस प्रकार समझते हैं। साथ ही, यह अध्ययन दर्शाता है कि डिजिटल डेटा पारंपरिक स्वास्थ्य सर्वेक्षणों के साथ मिलकर लोगों के वास्तविक अनुभवों को अधिक व्यापक और बेहतर ढंग से समझने में सहायक हो सकता है।

सुश्री आयुषी दास की यह उपलब्धि न केवल उनके उत्कृष्ट शोध कार्य को दर्शाती है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को भी सुदृढ़ करती है। हम सुश्री आयुषी दास को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हैं तथा जनसंख्या स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान की सराहना करते हैं।

विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा प्रकाशित शोध-सामग्रियों की लिंक सहित सूची :-

<table>
<tr><th>क्रम संख्या</th><th>प्रकाशित</th><th>शोध-पत्रों का शीर्षक</th><th>लिंक</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>अक्तूबर 2025
लेखकों के नाम : परमिता मजूमदार, अपराजिता चट्टोपाध्याय एवं सतरूपा घोष</td><td>प्राइमरी इन्फर्टिलिटी एंड इट्स एसोसिएशन विथ मैरिटल डिसरप्शन्स एंड हैविंग को-वाइव्स: एविडेंस फ्रॉम ए नेशनली रिप्रेज़ेंटेटिव सर्वे इन इंडिया</td><td rowspan="11">अधिक जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें
www.iipsindia.ac.in

तत्पश्चात अनुसंधान एवं प्रकाशन अनुभाग में जाएँ और फिर हालिया प्रकाशन पर क्लिक करें — वहाँ आपको ये सभी प्रकाशन मिल जाएँगे।</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>नवंबर 2025
लेखकों के नाम : मनोज डाकुआ एवं हेमखोथांग ल्हुंगडिम</td><td>लिविंग अरेंजमेंट्स एंड इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ लेफ्ट बिहाइंड पेरेंट्स इन रूरल वेस्ट बंगाल, इंडिया: ए स्टडी ऑफ हाउसहोल्ड डायनेमिक्स</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>दिसंबर 2026
लेखकों के नाम: रघुनाथ मंडी, धनंजय डब्ल्यू. बनसोड , पीएच.डी., अमित कुमार गोयल</td><td>रीथिंकिंग फैमिली केयर: हाउ चेंजिंग फैमिली डायनैमिक्स आर रीशेपिंग सपोर्ट फॉर ओल्डर एडल्ट्स इन इंडिया?</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>दिसंबर 2026
लेखकों के नाम: ऋषिकेश पी. खडसे, संजय कुमार पाल, रूफी शेख और धनंजय डब्ल्यू. बनसोड</td><td>एक्सप्लोरिंग द फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग रिपीटेड सी-सेक्शन डिलीवरीज़ इन इंडिया: इनसाइट्स फ्रॉम द नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2019-21</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>जनवरी 2026
लेखकों के नाम: अभिषेक आनंद, टी. आर. दिलीप, लियोन क्रेग, मनीष भंडारे, सारा मैकलेनन, अरविंदा मीरा गुंटुपल्ली</td><td>इफेक्ट ऑफ डाइटरी इंटरवेंशन्स ऑन बॉडी कम्पोज़िशन एंड क्वालिटी ऑफ लाइफ इन स्टमक कैंसर सर्वाइवर्स आफ्टर गैस्ट्रेक्टॉमी: ए सिस्टेमैटिक रिव्यू</td></tr>
<tr><td>6.</td><td>फ़रवरी 2026
लेखकों के नाम : दीप्ति गोविल, टी. वी. शेखर एवं मनीष लेखवानी</td><td>असेसिंग द अनमेट नीड फॉर हेल्थकेयर अमंग ओल्डर एडल्ट्स इन इंडिया: एविडेंस फ्रॉम ए नेशनवाइड सर्वे</td></tr>
<tr><td>7.</td><td>फ़रवरी 2026
लेखक का नाम: अपराजिता चट्टोपाध्याय</td><td>लेट हर शाइन: एम्पावरिंग वूमेन एंड क्लोज़िंग इंडिया जेंडर गैप इन स्टेम</td></tr>
<tr><td>8.</td><td>फ़रवरी 2026
लेखकों के नाम: अरूप जाना, अपराजिता चट्टोपाध्याय और सृजीत मिश्रा</td><td>स्पैटियल एसोसिएशन बिटवीन न्यूट्रिएंट डेफिशिएंसी एंड एग्रीकल्चरल डाइवर्सिटी इन इंडिया</td></tr>
<tr><td>9.</td><td>मार्च 2026
लेखकों के नाम: अभिषेक आनंद, टी. आर. दिलीप, मनीष भंडारे, अमित चोपड़े, स्वरा पाटिल, शैलेश वी. श्रीखंडे</td><td>फाइनेंशियल टॉक्सिसिटी अमंग गैस्ट्रिक एंड पैंक्रियाटिक कैंसर सर्वाइवर्स इन इंडिया एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन क्वालिटी ऑफ लाइफ</td></tr>
<tr><td>10.</td><td>मार्च 2026
लेखकों के नाम: परमिता मजूमदार, शिरीन जे. जेजीभॉय, अपराजिता चट्टोपाध्याय और देबाश्री सिन्हा</td><td>मेल एंगेजमेंट इन मेंस्ट्रुअल केयर: एविडेंस फ्रॉम बॉयज़ एंड यंग मेन इन अर्बन स्लम्स इन मुंबई</td></tr>
<tr><td>11.</td><td>मार्च 2026
लेखकों के का नाम: परमिता मजूमदार, शिरीन जे. जेजीभॉय और अपराजिता चट्टोपाध्याय</td><td>चैलेंजेज़ इन मेंस्ट्रुअल हेल्थ सर्विस डिलीवरी टू गर्ल्स एंड यंग वूमेन इन मुंबई स्लम्स: प्रोवाइडर पर्सपेक्टिव्स</td></tr>
</table>

साहित्य जगत से............

मूलनाम : धर्मवीर भारती
जन्म : 25 दिसंबर 1926 (प्रयागराज, उ. प्र.)
निधन : 04 सितंबर 1997 (मुंबई, महाराष्ट्र)

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद में हुआ। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा भी इलाहाबाद में ही प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही वे पत्रकारिता से जुड़े रहे और कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। साहित्यिक संस्था परिमल के साथ उनकी सक्रिय भागीदारी रही, जिसने उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में वे प्रसिद्ध पत्रिका 'धर्मयुग' के प्रधान संपादक बने।

धर्मवीर भारती ने लेखन की शुरुआत कॉलेज के दिनों से ही कर दी थी। बतौर कवि दूसरा सप्तक में शामिल किए जाने से पहले ही उनके एक उपन्यास, दो कहानी-संग्रह, एक समीक्षा-ग्रंथ तथा अनुवाद की एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी। वे अपेक्षाकृत कम कविताएँ लिखते थे, किंतु उनके बारे में कहा जाता है कि "भारती कविताएँ कम लिखते हैं, लेकिन जब लिखते हैं तो अपनी रुचि और अपने ईमान के साथ लिखते हैं।" 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन के बाद कवि के रूप में भी उनकी व्यापक चर्चा होने लगी।

कविता के प्रति उनका मानना था कि उसकी कसौटी इतनी व्यापक होनी चाहिए कि वह सभी नवीन अनुभूतियों को समेटते हुए मानव की चिर-आदिम प्रवृत्तियों के मर्म को स्पर्श कर सके। धर्मवीर भारती की प्रतिष्ठा एक श्रेष्ठ कवि के साथ-साथ एक अप्रतिम गद्य लेखक के रूप में भी रही है। उनकी पत्रकारिता और संपादकत्व पर विशेष रूप से चर्चा की जाती है, और उनके संपादन में साप्ताहिक पत्रिका 'धर्मयुग' अपने समय की अग्रणी और प्रभावशाली पत्रिका मानी गई। उनकी प्रमुख कृतियों में गुनाहों के देवता, अंधा युग तथा सूरज का सातवाँ घोड़ा जैसी रचनाएँ शामिल हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य जगत में अद्वितीय लोकप्रियता प्राप्त की।

वर्ष 1972 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उन्हें संगीत नाटक अकादमी का 'सर्वश्रेष्ठ नाटककार सम्मान', भारत-भारती पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार तथा व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से अलंकृत किया गया।

प्रमुख कृतियाँ :
कविता-संग्रह :
ठंडा लोहा (1952), सात गीत वर्ष (1959), कनुप्रिया (1959), सपना अभी भी (1993), कुछ लंबी कविताएँ (1958), आद्यंत (1999), मेरी वाणी गैरिक वासना (1999)

पद्य नाटक :
अंधा युग (1954)

नए संसद भवन के दोनों सदन अत्यंत सुंदर ढंग से सुसज्जित हैं तथा आधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं। छात्रों एवं अधिकारियों को दोनों सदनों की सार्वजनिक दीर्घा में बैठने का अवसर भी प्राप्त हुआ। भ्रमण मार्गदर्शक ने अत्यंत कुशलता से संसद सत्रों के संचालन, उनकी तैयारियों तथा विभिन्न कक्षों और संरचनाओं से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण एवं रोचक तथ्यों की जानकारी प्रदान की। समूह के लिए संसद की कैंटीन में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई। इसके पश्चात छात्रों को पुराने संसद भवन (संविधान सदन) ले जाया गया, जहाँ उन्होंने संसद के केंद्रीय कक्ष का अवलोकन किया, जहाँ वर्ष 1947 में ब्रिटिश शासन से भारत को सत्ता हस्तांतरण का ऐतिहासिक क्षण घटित हुआ था। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रतीक भारतीय संसद को निकट से देखने का यह अनुभव छात्रों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक एवं स्मरणीय रहा।

कहानी-संग्रह :
मुरदों का गाँव (1946), स्वर्ग और पृथ्वी (1949), चाँद और टूटे हुए लोग (1955), बंद गली का आख़िरी मकान (1969), साँस की कलम से (समस्त कहानियाँ एक साथ) (2000)

उपन्यास :
गुनाहों के देवता (1949), सूरज का सातवाँ घोड़ा (1952), ग्यारह सपनों का देश (प्रारम्भ व समापन) (1960)

निबंध-संग्रह :
नदी प्यासी थी (1954)

अनुवाद :
ऑस्कर वाइल्ड की कहानियाँ (1946), देशांतर — इक्कीस देशों की आधुनिक कविताएँ (1960)

शोध-प्रबंध :
सिद्ध साहित्य (1968)

यात्रा-विवरण :
यात्रा चक्र (1999)

साक्षात्कार :
धर्मवीर से साक्षात्कार (1999)
धर्मवीर भारती की समस्त रचनात्मक कृतियों का संकलन "धर्मवीर भारती ग्रंथावली" के नौ खंडों में प्रकाशित किया गया है, जो उनके व्यापक साहित्यिक अवदान को समग्र रूप में प्रस्तुत करता है।

(स्थापना / Established in 1956)
बेहतर भविष्य के लिए क्षमता निर्माण
Capacity Building for Better Future

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (विश्वविद्यालय समतुल्य)

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन
भारत सरकार
गोवंडी स्टेशन रोड, बी. एस. देवशी मार्ग देवनार, मुंबई,
महाराष्ट्र -400088